॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

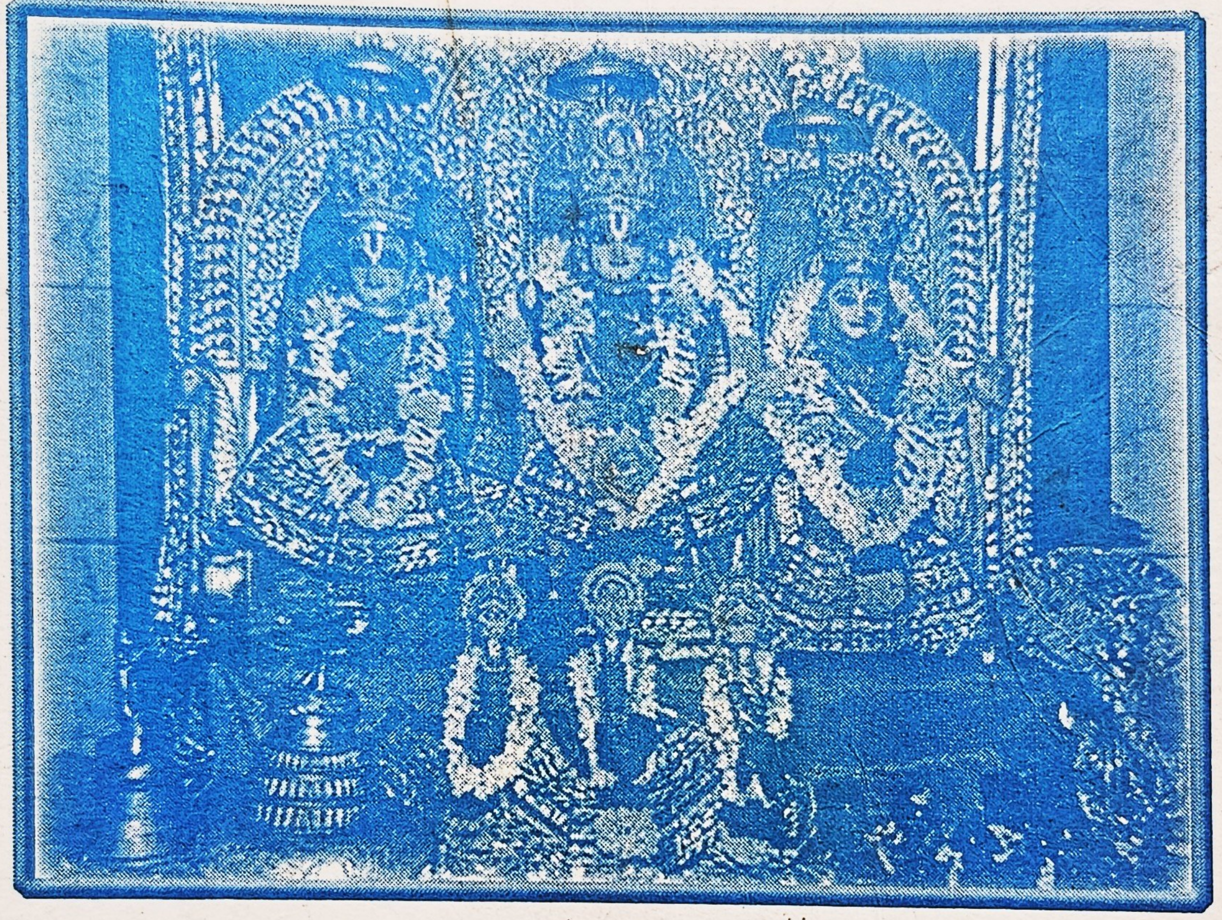

॥ नित्य पाठ स्तोत्र माला ॥

• सविनय सादर •

सोमाणी परिवार

पूना

॥ आचार्य देवो भव ॥

श्रीमद ज.गु.वै.प्र.भ. स्वामी
श्री अनंताचार्यजी महाराज, श्रीकांची

श्रीमद ज.गु.प्र.भ. गादी स्वामी
श्री श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज, श्रीकांची

वै. श्री श्री १००८ श्री रामाचार्यजी महाराज
प्रथम पिठाधीपती श्री रामबाग, पंढरपूर

वै. श्री श्री १००८ श्री लक्ष्मीप्रपन्ना चार्यजी महारा
(फलाहारी) द्वितीय पिठाधीपती श्री रामबाग, पंढर

वै. श्री श्री १००८ श्री रंगाचार्यजी महाराज
तीय पिठाधीपती श्री रामबाग, पंढरपूर

वै. श्री श्री १००८ श्री पुरुषोत्तमाचार्यजी महारा
चतुर्थ पिठाधीपती श्री रामबाग, पंढरपूर

मनोज कुमार शास्त्री (अयोध्या)

।।श्रीः।।

श्रियै नमः

श्रीमते रामानुजाय नमः

नित्य पाठ स्तोत्र माला

समर्पण

सदा स्मरणीय वै.वा.पू.
पिताजी एवं वै.वा.पू.
माताजी तथा और सभी
पूर्वजों के चरणों में यह स्मृति
पुष्पांजलि सादर समर्पित ।

सपरिवार

अरविंद कुमार सोमाणी

प्रकाशक

श्रीवैष्णव दासानुदास सोमाणी परिवार

पुणे

नित्य -पाठ -स्तोत्र-माला

प्रकाशन निमित्त :

श्रीवैष्णव दासानुदास कृष्णकुमार मधुसूदन सोमाणी,
१८ अ-२, मुंबई पुणे रोड,
पुणे - ४११ ००३ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : (०२०) २५८११६८५, २५८१०८००
Mob: (०)९८९०४६४२००
© प्रकाशक

संस्करण : द्रितीय २००५ (संवत्-२०६२)

प्रतियाँ : ५००

मूल्य : साग्रह नित्य पाठ

मुद्रक :
(आफ्-सेट), लेजर अक्षर संयोजक (डि.टि.पि, ग्राफिक्स) ।
पद्मालया प्रिंटर्स, मंड्या, कर्नाटक.

कवर पृष्ठ : पद्मश्री आफसेटस्, पुणे (महाराष्ट्र)

आशीर्वचन

श्रीमते रामानुजाय नमः

।। श्रीमद्वरवरमुनये नमः ।। ।। श्रीवादिभीकरमहामुनये नमः ।।

श्रीकांची प्रतिवादि भयंकर मठाधीश्वराः
श्रीभगवद्रामानुज सत्सम्प्रदायाचार्याः जगद्गुरु गादीस्वामी
श्रीमद् श्रीनिवासाचार्यस्वामिनः

श्री प्रतिवादि भयंकर मठ, ३१/१३, सन्निधि वीथी, कांचीपुरम् - ६३१ ५०३
(तमिलनाडु), फोन : (०४११२) २६८७१८

द्वितीय-श्रावण-शुक्लपक्ष-१५-रविवार-सं-२०६१,

दिनांक : २९.०८.२००४

श्रीयुत अरविंद कुमार जी सोमानी रामानुज श्रीवैष्णवदास सपरिवार को अनेकानेक मङ्गलाशासन मालूम होवें । आप के पिता व माता जी की स्मृति में 'नित्य-स्तोत्र-माला' पुस्तक को प्रकाशित कर रहे हैं जान कर प्रसन्नता हुई । श्रीवैष्णवों में एक अद्वितीय स्तोत्रमाला की पद्धति हैं जिस में भगवद्भागवताचार्य की स्तुति और आल्वार आचार्यों के रचित स्तुति शामिल रहती है । ऐसी स्तुतिग्रन्थ को प्रकाशित करने से श्रीवैष्णवसमाज को महान उपकार होगा । यह प्रयत्न प्रशंसनीय मात्र नहीं अनुकरणीय भी है । भगवच्चरणारविंदों में प्रार्थना करता हूं कि आपका यह प्रयत्न सफल हों और श्रीवैष्णवसमाज लाभान्वित हो ।

इयन्त्येव मङ्गलशासनानिप्र.
गादी. श्रीनिवासाचार्य

आशीर्वचन

।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ।। श्रीवादिभीकरमहागुरवे नमः।।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य वेदान्त मार्तण्ड यतीन्द्र-स्वामिरामनारायणाचार्य कृपापात्र जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्यजी महाराज 'विद्याभास्कर'

अध्यक्ष

कोसलेश सदन धर्मादाय (ट्रस्ट)

अयोध्या-फैजाबाद (उ.प्र.) २२४१२३, फोन : (०५२७८) २३२०४३

दिनांक : ०५.१०.२००४

श्रीमद् भगवद् भागवताचार्य सेवा परायण श्रीवैष्णव कुलभूषण परम भागवत श्रीमान् अरविन्द सोमानी सकुटुम्ब को शुभ मङ्गलानुशासन प्राप्त हो ।

विदित हो आपने स्तोत्रों का एक सङ्ग्रह प्रकाशित करने का पवित्र कार्य प्रारम्भ किया है जो अति उत्तम कार्य है ।

भगवान् 'स्तवप्रिय' हैं । अतः पूजन के समय भगवान् को स्तोत्र सुनाना चाहिए । क्रम यह है कि पहले सुदर्शनस्तोत्र फिर श्रीलक्ष्मी स्तोत्र उसके पश्चात् भगवान् नारायण के स्तोत्र सुनाना चाहिए । पूर्णिमा तथा एकादशी के दिन विशेष रूप से हयग्रीव स्तोत्र सुनाना चाहिए । आपके पूर्वजों ने पहले इस प्रकार का प्रकाशन कराया था अब आप उनकी पावन स्मृति में पुनः प्रकाशन करा रहे हैं यह उन पूर्वजों को सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी । आप उस कार्य में सफलता प्राप्त करें तथा इस प्रकार कैंकर्य द्वारा श्रीमद् भगवद् भागवताचार्य मुखोल्लास करते रहें ऐसी भगवान् कोसलेश प्रभुसे प्रार्थना है ।

मङ्गलाभिलाषी

ज.रा. श्रीस्वामी वासुदेवाचार्य, 'विद्याभास्कर'

आशीर्वचन

श्रीमते रामानुजाय नमः

'अनन्त संदेश' मासिक पत्रिका कार्यालय,
श्री रंगनाथ प्रेस श्री वृन्दावन धाम - २८१ १२१ (उ.प्र)
फोन : (०५६५) ४४२१३१,

दिनांक : ०६-१०-२००४

प्रधान संपादक : **पं. श्री केशव देव शास्त्री**
आचार्य नरेशचन्द्र शर्मा 'नारायण'

भगवत् सेवा परायण परमवैष्णव श्री अरविंद कुमार सोमाणी सपरिवार को श्री धाम वृन्दावन से अनेकानेक मंगलाशासन प्राप्त होवे ।
यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप एक 'नित्य स्तेत्र माला' नामक पुस्तक का प्रकाशन करने जारहे है । प्राचीन ग्रंन्थ-प्राचीन मंदिर एवं पूर्वाचार्यों की स्मृति में कैंकर्य यह सभी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ हैं । आपके परिवार द्वारा ऐसे श्रेष्ठ कार्य होते चले आरहे है । यह प्रशंसनीय है ।

भगवान् श्रीहरि के प्रसन्नता के लिए उनकी स्तुति-प्रार्थना करना नवधा भक्ति का प्रमुख अंग है । श्लोक है -

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।।

अर्चना-वन्दना-कीर्तन आदि के लिए व्यवस्थित प्रकाशित संग्रह की आवश्यकता थी जिसका प्रकाशन आपके द्वारा हो रहा है इससे श्रीवैष्णव समाज को विशेष लाभ प्राप्त होगा ।
हमारे पूज्य पिता विद्वान् पं.श्री केशवदेवजी शास्त्री, संपादक 'अनंत संदेश' वृन्दावनधाम ने भी इस कार्य के लिए हार्दिक संतोष व्यक्त किया है तथा इस प्रकाशन के लिए हार्दिक मंगलकामना प्रदान कर रहे है । जय श्रीमन्नारायण ।

मंगलाकांक्षी

आचार्य नरेशचन्द्र शर्मा 'नारायण'
श्री धाम वृन्दावन

शुभकामना

श्री हरिः

आचार्य श्री किशोर व्यास
'धर्मश्री' पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे

दिनांक : १२-१०-२००४

भारतीय सनातन वैदिक धर्म की वैष्णव भक्ति धारा में भगवान की सेवा-पूजा के साथ साथ स्तोत्र पाठ एवं भगवद् गुणानुवाद एवं नाम संकिर्तन की बहुत महिमा प्रतिपादित है ।

आनंद की बात है कि, श्री अरविंद सोमाणी ने अपने पू. वै. वासी माता-पिताश्री की प्रेरणा एवं पुण्य स्मृति में 'नित्य स्तोत्र माला' नामक पुस्तक प्रकाशित करके एक अत्यन्त पवित्र सेवा कार्य किया है । मूलतः पुणे निवासी यह सोमाणी परिवार सुविख्यात धर्मसेवक एवं सदाचारनिष्ठ वैष्णव परिवार रहा है । इस कार्य के माध्यम से श्री अरविंदजी ने प्रभुभक्ति की अपना परंपरा आगे चलाई है यह देखकर आनंद होता है ।

अपनी इस पुस्तक में वैष्णव के लिए नित्य पाठ करने कुछ प्रास्ताविक कविताएँ, मंगलारती, अर्चना नामावली तथा कुछ भजनादि विविध धार्मिक रचनाएँ संगृहीत की है। ये रचनाएँ अत्यन्त सुन्दर भावपूर्ण एवं लय बद्ध है। इन रचनाओं से लोगों में भगवान के प्रति भक्ति भाव बहुत आसानी से जागृत होता है।

श्री अरविंदजी ने परमेश्वर चिंतन में उपयोगी एक अच्छा कार्य सफलता से किया है। सपरिवार उन्हें इस कार्य के लिए साभिनंदन धन्यवाद तथा परमार्थ पथपर प्रगति के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ ।

इति

शुभाकांक्षी

किशोर व्यास

।। श्री ।।

।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।।

प्रकाशकीय प्रस्तावना

'अंतरंग' ....

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवं प्रेरणा से ही 'नित्य-स्तोत्र-माला' पुस्तक के प्रकाशन कार्य हुआ ।
बहुत दिनोंसे ही वैकुण्ठ वासी पूज्य पिताजी एवं वैकुण्ठ वासी पूज्य माताजी तथा और सभी पूर्वजों के पुण्य स्मृतिमें एक धार्मिक एवं उपयुक्त पुस्तक प्रकाशित करने की अभिलाषा मन में थी ।

इन सभी पूर्वजों के पावन स्मृतिमें ये श्रद्धा-सुमन समर्पित करने का संकल्प आज परिपूर्ण हुआ ।

'कलियुग' में केवल 'हरिनाम' ही सहारा है । परमपिता परमात्मा का नित्य चिंतन एवं स्मरण से ही सत्संग की प्रेरणा होती है जिससे हमें अच्छे विचार करने की क्षमता मिलती है । अच्छे विचारोंसे अच्छे कर्म होंगे और यही शुभ कर्म अगली आनेवाली पीढियों के लिए अच्छे संस्कार बनेंगे । अतः सुसंस्कारों की यह शृंखला अखंडित रखना हम सबका परम कर्तव्य है ।

इस पुस्तक प्रकाशन में पू ।। डॉ. श्री नारायणपति शास्त्रीजी एवं उनके सहकारी विद्वान. पू. श्री. एस. नारायणजी, विद्वान पू. श्री. एम्बार वरदाचारजी और अकेडमी के सभी सदस्यों, उनका अनमोल संशोधन सहकार्य मिला जिनके हम हृदयसे आभारी हैं । सारे भगवत् प्रेमियों से यह प्रार्थना है, कि इस पुस्तक का नित्य पाठ करके हमारा यह दिव्य प्रयास को सफल बनायेंगे । इस पुस्तक प्रकाशन में कोई भूल या त्रुटी रहगई हो तो हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

।। ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

२००५, (सम्वत्-२०६२)
पूना

विनम्र
दासानुदास
अरविंद कुमार सोमाणी
श्रीरामानुज वैष्णवदास

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	पृ.सं
१.	प्रकाशकीय प्रस्तावना	vii
२.	वाक्य गुरुपरम्परा	1
३.	आचार्यावतारबोधः	1
४.	श्रीरामाचार्यस्वामीजी की तनया	6
५.	श्रीरामाचार्यस्वामीजी की मंगलाशासन	8
६.	श्रीरामाचार्यस्वामीजी की प्रपत्तिस्तोत्रम्	10
७.	श्रीरामाचार्यस्वामीजी की परमपदतनया	13
८.	श्रीलक्ष्मीप्रपन्नाचार्यजी की तनया	14
९.	श्रीलक्ष्मीप्रपन्नाचार्यजी की परमपदतनया	14
१०.	श्रीरंगाचार्यस्वामीजी की तनया	14
११.	श्रीरंगाचार्यस्वामीजी की मंगलाशासन	14
१२.	श्रीरंगाचार्यस्वामीजी की प्रपत्तिस्तोत्रम्	16
१३.	श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी की तनया	16
१४.	श्रीवेङ्कटेशसुप्रभातम्	17
१५.	श्रीवेङ्कटेशस्तोत्रम्	22
१६.	श्रीयतिराजविंशतिः	25
१७.	स्तुतिः	29
१८.	स्तुतिः भयेप्रगठः	30
१९.	श्री गोदा स्तुतिः	31
२०.	श्री श्रीस्तवः	32
२१.	सुमंगलस्तोत्रम्	34
२१.	पंचायुधस्तोत्रम्	34
२३.	श्रीमहालक्ष्मी स्तोत्रम्	36
२४.	श्रीसीतारामस्तोत्रम्	37
२५.	हयग्रीवस्तोत्रम्	37
२६.	स्तोत्ररत्नम्	44
२७.	मुकुन्दमाला	57
२८.	मृत्युंजयस्तोत्रम्	65
२९.	मंत्रपुष्पांजलिःनं.१	67
३०.	मंत्रपुष्पांजलिः नं २	67
३१.	मन्त्रपुष्पांजलिः (नं.३)	68
३२.	तिरुमन्त्रम्	69
३३.	द्वयमन्त्रम्	69
३४.	चरमश्लोकः	69
३५.	वैकुण्ठनाथस्तुतिः	69
३६.	श्रीयामुनाचार्यविरचिता चतुश्श्लोकी	70
३७.	श्रीरामानुजस्तोत्रम्	71
३८.	स्वस्तिवाचनम् (नं.१)	72
३९.	स्वस्तिवाचनम् (नं.२)	72
४०.	विशेष गाथा	73
४१.	श्रीरामाचार्य तनिया श्रीपण्ढरपुर	74
४२.	श्रीरामार्य भये आचार्य	75
४३.	श्रीनृसिंह अवतार तनियन	75
४४.	श्रीवामन अवतार तनियन	76
४५.	श्रीराम अवतार तनियन	76
४६.	श्रीकृष्ण अवतार तनियन	76
४७.	अर्चावतरणम्	77
४८.	तिरुमंजन मन्त्रम्	80
४९.	तिरुमंजनप्रबन्धः	81
५०.	द्वादश नामानि	83
५१.	गुरुपरम्परा	83
५२.	श्रीरामानुजप्रपत्तिः	86
५३.	श्रीरामानुजसुप्रभातम्	88
५४.	भगवद्भागवताचार्यवैभवम्	92
५५.	भवमंगलाष्टकम्	94
५६.	जगन्नाथाष्टकम्	96
५७.	अच्युताष्टकम्	97
५८.	नारायणाष्टकम्	99
५९.	श्रीरामाऽष्टोत्तरशतनामावलिः	101
६०.	श्रीकृष्णाऽष्टोत्तरशतनामावलिः	103
६१.	श्रीसुदर्शनाऽष्टोत्तरशतनामावलिः	106
६२.	श्रीजानकी जी के जगाने का भजन	109
६३.	श्रीभगवान को जगाने का भजन	109
६४.	बाजे रुनक झुनक (भजन)	110
६५.	सीताराम भजन	111
६६.	मेरे वैष्णव परिवार (भजन)	113
६७.	मंगला आरती	114
६८.	श्रीसत्यनारायणजी की आरती	115
६९.	श्रीहनुमानजी की आरती	116
७०.	शयन आरती	118

वाक्यगुरुपरंपरा

श्रीमते रामानुजाय नमः

१. अस्मद्गुरुभ्यो नमः
२. अस्मत्परमगुरुभ्यो नमः
३. अस्मत्सर्वगुरुभ्यो नमः
४. श्रीमते रामानुजाय नमः
५. श्रीपरांकुशमुनये नमः
६. श्रीमद्यामुनमुनये नमः
७. श्रीराममिश्राय नमः
८. श्रीपुण्डरीकाक्षाय नमः
९. श्रीमन्नाथमुनये नमः
१०. श्रीमते शठकोपाय नमः
११. श्रीमते विष्वक्सेनाय नमः
१२. श्री श्रियै नमः
१३. श्री श्रीधराय नमः

अस्मद्देशिकमस्मदीयपरमाचार्यानशेषान् गुरून्
श्रीमल्लक्ष्मणयोगिपुङ्गवमहापूर्णौ मुनिं यामुनम् ।
रामं पद्मविलोचनं मुनिवरं नाथं शठद्वेषिणं
सेनेशं श्रियमिन्दिरासहचरं नारायणं संश्रये ॥

आचार्यावतारबोधः

(मीने, रोहिण्यां, श्रीरङ्गनाथाविर्भावः)

तपस्ये मासि रोहिण्यां तटे सह्यभुवस्स्थितम् ।
श्रीरङ्गशायिनं वन्दे सेवितं (बुध) सूरिदेशिकैः ॥
(नित्यं) श्रीस्तनाभरणं तेजः श्रीरंगेशयमाश्रये ।

चिन्तामणिमिवोद्धान्तमुत्संगेऽनन्तभोगिनः ।।

(मीने, उत्तराफल्गुन्यां, श्रीरंगनायक्याविर्भावः)

फाल्गुनोत्तरफल्गुन्यां सम्भूतां श्रियमाश्रये ।
विष्णोर्दिव्यपदाम्भोजघटकां तत्पदाश्रिताम् ।।

(नित्यं) नमः श्रीरङ्गनायक्यै यद्भ्रूविभ्रमभेदतः ।
ईशेशितव्यवैषम्यनिम्नोन्नतमिदं जगत् ।।

(तुलायां, पूर्वाषाढे श्रीविष्वक्सेनाविर्भावः)

तुलागते दिनकरे पूर्वाषाढासमुद्भवम् ।
पद्मापदाम्बुजासक्तं सेनाधिपमहं भजे ।।

(नित्यं) श्रीरङ्गचन्द्रमसमिन्दिरया विहर्तुं
विन्यस्य विश्वचिदचिन्नयनाधिकारम् ।
यो निर्वहत्यनिशमङ्गुलिमुद्रयैव
सेनान्यमन्यविमुखास्तमशिश्रियाम ।।

(वृषभे, विशाखायां, श्रीशठकोपस्वाम्याविर्भावः)

वृषभे तु विशाखायां कुरुकापुरिकारिजम् ।
पाण्ड्यदेशे कलेरादौ शठारिं सैन्यपं भजे ।।

ऋषिं जुषामहे कृष्णतृष्णातत्त्वमिवोदितम् ।
सहस्रशाखां योऽद्राक्षीद् द्राविडीं ब्रह्मसंहिताम् ।।

(मिथुने, अनुराधायां, श्रीमन्नाथमुन्याविर्भावः)

ज्येष्ठमासे ह्यनूराधाजातं नाथमुनिं भजे ।

यच्छ्रीशठारेः श्रुतवान् प्रबन्धमखिलं गुरोः ।।

नमोऽचिन्त्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्यराशये ।
नाथाय मुनयेऽगाधभगवद्भक्तिसिंधवे ।।

व्योम्नः परस्तात्सविधं समेत्य
लक्ष्म्या नियोगात् कुरुकाधिराजः ।
समन्त्रराजं द्वयमाह यस्मै
नाथाय तस्मै मुनये नमोऽस्तु ।।

(मेषे, कृत्तिकायां, श्रीपुण्डरीकाक्षस्वाम्याविर्भावः)

मेषमासे सरोजाक्षं कृत्तिकाजातमाश्रये ।
नाथयोगिपदाम्भोजद्वन्द्वप्रवणमानसम् ।।

(नित्यं) नमः पङ्कजनेत्राय नाथश्रीपादपङ्कजे ।
न्यस्तसर्वभरायास्मत्कुलनाथाय धीमते ।।

(कुम्भे मघायां, श्रीराममिश्रस्वाम्याविर्भावः)

कुम्भमासे मघोद्भूतं राममिश्रमुपास्महे ।
पुण्डरीकाक्षपादाब्जसमाश्रयणशालिनम् ।।

अयत्नतो यामुनमात्मदासमलर्कपत्रार्पणनिष्क्रयेण ।
यः क्रीतवानास्थितयौवराज्यं नमामि तं राममसत्त्वम् ।।

(कर्कटे उत्तराषाढायां, श्रीयामुनार्यस्वाम्याविर्भावः)

शुचौ मास्युत्तराषाढाजातं यामुनदेशिकम् ।
श्रीराममिश्रचरणसरोजाश्रितमाश्रये ।।

यत्पदाम्भोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ।।

(धनुषि, ज्येष्ठायां श्रीमहापूर्णस्वाम्याविर्भावः)

धनुर्ज्येष्ठासमुद्भूतं यामुनांघ्रिसमाश्रितम् ।
महापूर्णं यतीद्राय मन्त्ररत्नपदं भजे ।।

कमलापतिकल्याणगुणामृतनिषेवया ।
पूर्णकामाय सततं पूर्णाय महते नमः ।।

(मेषे, आर्द्रायाम् श्रीरामानुजाचार्यस्वाम्याविर्भावः)

मेषार्द्रासंभवं विष्णोर्दर्शनस्थापनोत्सुकम् ।
तुण्डीरमंडले शेषमूर्तिं रामानुजं भजे ।।

रामानुजमुनिर्जीयाद्यो हरेर्भक्तियन्त्रितः ।
कलिकोलाहलक्रीडामुधाग्रहमपाहरत् ।।

यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्तम्,
व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ।
अस्मद् गुरोर्भगवतोऽस्य दयैक सिन्धोः,
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।

(श्रीवरवरमुनिस्वाम्याविर्भावः)

तुलायामतुले मूले पाण्ड्ये कुन्तीपुरीवरे ।
श्रीशेषांशोद्भवं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ।।

श्रीशैलेशदयापात्रम् धीमक्त्यादिगुणार्णवम् ।

यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ।।

(तीर्थ (माघ) कुम्भ कृष्णपक्ष द्वादशी)

कुम्भं भास्वति याति तत्सुतदिने पक्षे वलर्क्षेतरे
द्वादश्यां श्रवणर्क्षभाजि रुधिरोद्गार्याख्यसंवत्सरे ।
धीमद्भक्त्यादिगुणार्णवो यतिवराधीनाखिलात्मस्थितिः
श्रीवैकुण्ठमकुण्ठवैभवमगात् कान्तोपयन्ता मुनिः ।।

(श्री आद्य प्रतिवादिभयङ्कर स्वामी)

वेदान्तदेशिककटाक्षविवृद्धबोधं
कान्तोपयन्तृयमिनः करुणैकपात्रम् ।
वत्सान्ववायमनवद्यगुणैरुपेतं
भक्त्या भजामि प्रतिवादिभयङ्करार्यम् ।।

(जगद्गुरु गादिश्रीमद् अनन्ताचार्यजी महाराज)

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीकृष्णसूरिपदपंकजभृङ्गराजम् ।
श्रीरङ्गवेङ्कटगुरूत्तमलब्धबोधम्
भक्त्या भजामि गुरुवर्यमनन्तसूरिम् ।।

(जगद्गुरु श्रीमद् कृष्णमाचार्य जी महाराज)

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं
नित्यं त्वनन्तगुरुवर्यतनूजरत्नम् ।
श्रीमज्जगद्गुरुकृपापरिलब्धबोधं
श्रीकृष्णदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।।

(सिंहासनाधीश जगद्गुरु श्रीस्वामी श्रीनिवासाचार्यजी महाराज)

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं
श्रीकृष्णसूरितनयं सुधियं सुशीलम् ।
श्रीमज्जगद्गुरुदयेक्षणलक्ष्यधन्यं
श्री श्रीनिवासगुरुमन्वहमाश्रयेऽहम् ।।

श्री श्री१००८ श्री रामचार्य स्वामीजी की तनया

जगन्नायार्थ कृपया वेदान्तद्वय पारगम्
वात्सल्यादि गुणावासं वन्दे रामनुजं गुरुम् ॥
आकारत्रयमु1य सद्गुणसारः सन्मंत्तरत्नान्वय
श्री रामानुज देशिकात्मज नृंसिहाचार्य पुनं सहा ।
श्री मदवेंकटराम सोदरपति श्री पादपद्मोल्लुसन्
मध्वास्वादन तुष्ट वेंकट जगन्नाथार्य मीडि महि ॥
श्रीमन्यरत्न कुल दुग्धपयोधिचन्द्रं
रामानुजार्यगुरूवर्यतनुजरत्नम्
तत्प्रेमसाधितसमस्तरहस्यबोधं
श्रीमन्नृसिहगुरूवर्यमहंप्रपद्दे ॥
श्रीमन्मरत्नकुलवारिधिपूर्णचन्द्रं
श्रीश्रीनिवासगुरूवर्यपदाब्जभृगम् ।
तत्प्रीतिलब्धनिगमान्तयुगार्थबोधं
रामानुजार्य मनघं शरणं प्रपद्दे ।
वेंकटार्यपदाम्भोजद्वंद्वप्रवणमानसम् ।
तत्सूनुंतत्कृपापात्रंश्रीनिवासगुरूंभजे ॥
श्रीवादिभीकराचार्यसमाश्रयणशालिनम् ।

वेंकटेशकृपापात्रं वन्दें वेंकटदेशिकम् ।।

रामनुजगुरोः पौत्रं

तत्पादाब्जैकधारकम् ।

वात्साल्यादि गुणावासं वन्दे

वादिभयंकरम् ।।

रामनुजगुरोःपौत्रं रामनुजगुरोःसुतम् ।

वरदार्यदयापात्रः वन्दे बादिभयंकरम् ।।

श्रीवादिभयकृत्पौनं तनयं विनयो ज्ज्वलम् ।

रामनुजागुरूं वन्दें वात्सल्यगुणसागरम् ।।

श्रीवादिभयकृत्पादविन्यस्वात्मभरंशुचिम् ।

श्रीवेंकटचार्यतनयं रामानुजगुरुं भजे ।।

श्री रम्यवरयोगीन्द्र श्रीपादाब्जमधुव्रतम् ।

श्रीवादिभयकृत्सुनुं श्रीनिवासगुरूं भजे ।।

वेदान्तदेहिाककटाक्ष विवृध्द बोधं ।

कान्तो पयन्तृयमिनंकरूणेकपात्रम् ।

वात्सान्ववायमनवद्यगुणोरूपेतम् ।

भक्त्या भजामिपरवादि भयंकरार्यम् ।।

श्री शैलशदयापात्रं धीभक्त्यादिगुर्णबम् ।

यतीन्द्रप्रवणं वन्दें रम्यजामातरं मुनिम् ।

नमः श्रीशेसनाथाय कुन्तीनगरजन्मने ।

प्रसादलब्धपरमप्राप्यकैंकर्यशालिने ।।

लोकचार्यगुरवे कुष्णपादस्य सूनवे ।

संसार भोगि सन्दष्टजीव जीवात्मने नमः ।।

श्रीकृष्णपादाब्जे नमामि शिरसा सदा ।

यत्प्रसादप्रभावेणसर्वसिद्धिरभुन्मय ।।

वेदान्तवेद्यामृतवारिराशेर्वेदार्थसारामृतपूत्म ग्र्यम् ।

आदायवर्षातमहंप्रपद्येकारूण्यपूर्णक-
लिवेरिगासम् ।।

नमोवेदान्तवेद्यायजगन्मंगलहेतवे ।

यस्यवागमृतासारपूरितंभुवनत्रम् ।।

श्रीपराशारभट्टार्यः श्रीरंगेशपुरोहित ः ।

श्रीवस्तांकसुत श्रीमान् श्रेयसे मेऽस्तु भूयसे ।।

रामानुजपदच्छाया

गोविन्दाद्धानपायिनी ।

तदायङ्गस्वरूपा सा

जीयान्मद्विश्रमस्थली ।।

योनित्थमच्युत पदाम्बुज रूक्म

ब्यामोहतस्तदितराणितृणार्यमेने ।

अस्मदगुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो

रामानुजस्य चरणो शरणं प्रपद्ये ।।

कमलापति कल्याणगुणामृतनिषेवया

पूर्णकामाय सततं पूर्णाय महते नमः ।।

यत्पादाम्भोरूहध्यानविध्वस्ता शेषकल्मषः

वस्तुतामुपयातोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ।।

अयत्नतो

यामुनमात्मदासमलर्कपत्रार्पणनिष्क्रयेण

यः क्रीतवानास्थित यौवराज्यं नमामि तं राममेयसत्त्वम् ।।

नमः मंकजनेत्राय नाथश्रीपादपंकजे ।
न्यस्तसर्वऊरायास्मत्कुलनाथाय धीमते ।।
नमोऽचिन्त्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्य राशये ।
नाथाय मुनयेऽगाध भगवद्भक्ति सिन्धवे ।।
मातापिता युवतया स्तनया विभूतिः ।
सर्वयदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।।
आद्यस्य नः कुलपते र्बकुला भिरामं ।
श्रीमत्तहंध्रियुगलं प्रणमामि मुर्ध्ना ।।
भुतंसरश्चमहदाह्वभट्टनाथ
श्रीभक्तिसारकुलशेखरयोगिवाहन ।
भक्तांघ्रिरेणुपरकालयतीन्द्रमिश्रान् ।
श्रीमत्परांकुशमुनिंप्रणतोऽस्मि नित्यम् ।।
श्रीरंगचंद्रमसमिन्दिरया विहर्तुं ।
विन्थस्तविश्व चिदचिन्नयनाधिकारम्
यो निर्वहत्यनिशामंगुलिमुद्रयैव
सोनान्यमन्यविमुखास्तमशिश्वयामः ।
नमः श्रीरंगनाथवर्य यदभ्रुविभ्रमभेदतः ।
इशेशितव्यवैषम्यनिम्नोन्नलमिदंजगत् ।।
श्रीस्तनाभरणं तेजः श्रीरंगेशयमाश्रये ।
चिन्तामणि मिवोद्वान्तमुत्सगेऽनन्तभोगिनः ।
नमोस्मदाचार्यपरम्पराश्यो
नमोनमोभगवतव्रजेभ्यः ।
नमोनमोऽनन्तमुखमरेभ्यो नमःश्रिये
श्रीपतये नमोऽस्तु ।।
लक्ष्मीनाथसमारम्भां
नाथयामुनमह्यमाम्
अस्मदाचार्यपर्यन्तोवन्देगुरुपरम्पराम् ।।
कृम्भेशातभिषातारे
भारद्वाजान्वयोद्भवम्
जगदीशांध्रिसद्भक्तं श्रीरामर्यमहं भजे ।।

श्री श्री १००८ श्री वै. श्रीरामाचार्य स्वामीजी की रामवाग, पण्डरपूर मंगलाशासन

श्रीमते रामानुजाय नमः

अथ श्रीमत्पाण्डुरंगपुरवासि
श्रीरामाचार्यस्वामिमंगलाशासनप्रारंभः ।
दाक्षिण्यपूर्णपयसांनिधयेऽस्तु नित्यं-

माद्दग्जनेषु कृपया धृतविग्रहाय ।
रामानुजार्यमतवर्द्धनदीक्षिताय
श्रीरामदेशिकवराय सुमंगलानि ।। १ ।।
भक्तिज्ञानविरागादिसर्वसद्गुणसिंधवे ।
करुणामृतपूराय श्रीरामाचार्याय मंगलम् ।। २ ।।
श्रीनिवासपदांभोजे नितरां सक्तचेतसे ।
चरमोपायनिष्ठाय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ३ ।।
वेदान्तद्वयसारार्थदिव्यनिष्ठागरीयसे ।
मंत्रत्रयार्थविज्ञाय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ४ ।।
श्रीरामानुजयोगींद्रपादांभोजैकसेविने ।
शांत्यादिगुणपुष्टाय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ५ ।।
शठजित्पादभक्ताय कामादिमलहारिणे ।
तत्त्वज्ञानोपदेष्ट्रे च श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ६ ।।
अज्ञानध्वान्तनाशाय ज्ञानदीपप्रकाशिने ।
मुमुक्षुजनसेव्याय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ७ ।।
श्रीरहस्यत्रयार्थज्ञैस्तत्त्वत्रयविशारदैः ।
महद्भिः कृतसंगाय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ८ ।।
श्रीनिवासाज्ञया श्रीमत्पांडुरंगपुरे शुभे ।
वैष्णवैः कृतवासाय श्रीरामाचार्याय मंगलम् ।। ९ ।।
श्रीपरांकुशनाथादिदिव्यसूक्त्यनुगामिने ।
विद्वज्जननिषेव्याय श्रीरामार्याय मंगलम् ।। १० ।।

सर्ववादिविनिर्जेत्रे सर्वशास्त्रैकभूमये ।
श्रीपतेः कृपया सम्यक् श्रीरामार्याय मंगलम् ।। ११ ।।

श्रीवैष्णवांबुनिधिपूर्णनिशाकराय
कामादिदोषपरिवर्जितमानसाय ।
श्रीमंत्ररत्नजगदीशसमाश्रिताय
नित्यं भवंतु शतशःकृतमंगलानि ।। १२ ।।

।। इति श्रीपांडुरंगपुरवासि श्रीरामाचार्यस्वामिमंगलानुशासनम् ।।

श्री श्री १००८ श्री वै. श्रीरामाचार्य स्वामीजी की रामवाग, पण्डरपूर प्रपत्तिस्तोत्रम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

अथ श्रीपांडुरंगपुरवासि श्रीरामाचार्यस्वामिप्रपत्तिस्तोत्रारम्भः ।।

श्रीमंत्ररत्नजगदीशगुरूत्तमार्य-
पादारविंदमकरंदनिषेवणार्य !
श्रीरामवर्य निजरक्षकभोग्यरूपौ-
दिव्यौ त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १ ।।

वेदान्तयुग्मविशदीकरणैकदक्ष-
मंत्रत्रयार्थविशदानुभवायताक्ष ।
मादृग्जनेषु सततार्पितसत्कटाक्ष
श्रीरामसूरिचरणौशरणं प्रपद्ये ।। २ ।।

श्रीवैष्णवार्यनिचयैर्विचरन्विदेशे

श्रीवैष्णवेतरमतप्रतिभेदनार्य ।
स्वासन्नलोककरुणार्पितमंत्रवर्य
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ३ ।।

कामादिदोषपरिहारकसत्त्वपूर्ते-
ज्ञानादिसर्वगुणसंश्रयणीयपूर्त्ते ।
सत्त्वोज्ज्वलार्यजनसंश्रयणैकयोग्यौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ४ ।।

श्रीमद्यतींद्रगुरुदिग्विजयैककेतो-
संसारसागरसमुत्तरणैकसेतो ।
मादृक्पतज्ज्ञनपरिग्रहदीक्षितश्री
रामार्यदिव्यचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ५ ।।

श्रीरंगशेषगिरिवारणशैलनाथा-
द्यर्च्चावतारपरिसेवनसंचरंतौ ।
स्वीयावनायनिजवैभवसंस्थितौश्री
रामार्यदिव्यचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ६ ।।

श्रीभाष्यकारचरणाब्जनिविष्टबुद्धे
श्रीभाष्यगूढविशदानुभवात्मशुद्धे ।
स्वार्तिच्छिददौ नतिकृतान्निखिलार्थलाभौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ७ ।।

स्वाचार्यपूर्णकृपयामलशास्त्रसंप-
द्विद्वज्जनैः परिणतामलपादुकार्यौ ।

भाग्येन संश्रितजनाननुमोदयन्तौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ८ ।।

जैनादिदुष्टमतनैशनिराशभानो
भक्त्या वशीकृतकृपालयकारिसूनो ।
तापत्रयीजनितदुःखविनाशधुर्यौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ९ ।।

श्रीवैष्णवागमसुपद्मविकासभानो !
मोहान्धकारविलयोत्तमचित्रभानो !
रागादिदूषितधियं नितरां दुरापौ-
स्वामिन्त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १० ।।

भक्त्याद्रवद्धृदयसज्जनलोकवन्द्यौ
श्रीपादतीर्थवरदानकराऽप्रमेयौ ।
स्वासन्नसर्वजनतापविमोचनार्यौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ११ ।।

दिव्योर्ध्वपुंड्रपरिमण्डितदिव्यमूर्त्ते
श्रीशंखचक्रपरिचिह्नितसद्भुजार्य ।
कंठे विशुद्धतुलसीनलिनाक्षमाल
श्रीरामसूरिरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १२ ।।

श्रीमत्तदीयनिवहार्चनतत्परार्य
गोदाग्रजस्य मुखपद्मविकाससूर्य ।
शुद्धान्तरंगपरिसेवितपादुकार्यौ
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १३ ।।

यस्यातिशुद्धकरुणामृतवारिराशे-

रंशांशतोऽतिमलिना अपि मादृशावै ।
श्रीवैष्णवार्यजनसंगमभाषणार्हाः
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १४ ।।

श्रीपांडुरंगपुरउत्तरतो विशाले-
दिव्यालये रघुपतिं सकुलं निधाय ।
संसेवनाद्यभिरताखिलसत्त्वराशेः
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १५ ।।

कारुण्यपूर्णजलधे ! जगदेकपूज्य-
श्रीदिग्जयैः परिजिताखिलपंडितेज्य ।
मादृक्पपन्नपरिपालनतत्परार्य
श्रीरामसूरिचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १६ ।।

प्रपत्तिषोडशीमेतां श्रीरामार्यस्य सद्गुरोः ।
चकाराचार्यकृपया तत्पदांभोजषटपदः ।। १७ ।।

।। इति श्रीपांडुपुरनिवासि श्रीरामचार्यस्वामिप्रपत्तिस्तोत्रम् ।।

श्री श्री १००८ वै. रामचार्य स्वामीजी महाराज की परमपद तनया ।

अब्दे क्रोधिनि भास्करे मकरगे माघे नवम्यां तिथ्यौ ॥

घस्रे मासि सिते दले शठजितो जन्मर्क्षयुक्ते स्वौ ध्यात्वा श्री जगदीश सूरि चरणौ यन्नित्यमुक्तौ बृतिं

श्रीरामार्य सुदेशिकः परमगाद्वि ष्णौः पदं शाश्वतम्

॥ श्री हरि ॥

श्री श्री १००८ श्री लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य (फलाहारी) स्वामीजी की तनया

भारद्वाजकुलोद्भुतं रामसूरि कृपालयम्

शललारायते कुम्भे वन्दे लक्ष्म्याश्रितं गुरुम् ।।

श्रीरामसूरिकरुणार्द्रकटाक्ष लक्ष्यं

वेदान्तयुग्म विबुधं सुगुणाम्बुराशिम्

कामाद्यपेतमखिलात्मगुणोरूपेतम्

लक्ष्मीप्रपन्न गुरूवर्यमहं प्रपद्ये ।।

श्री श्री १००८ श्री लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य (फलाहारी) स्वामीजी की परमपद तनया

अब्दे चतुर्थ्यां शशिवासरा1ये ।

पराभवे श्रावणमासि कृष्णेः ।

लक्ष्मीप्रपन्नालयदेशिकेन्द्रः ।

श्वाचार्य पादाब्ज समाधिरासीत ।।

श्री श्री १००८ श्री रंगचार्य स्वामीजी महाराज की तनया

तुलार्के चोत्तराभाद्रपदर्क्षे काश्यपोद्भवम्

श्रीप्रपन्नगुरोः शिष्यं श्रीरंगाचार्यमहं भजे ।।

श्री काश्यपान्वयपयोनिधिपूर्णचन्द्रम्

लक्ष्मीप्रपन्नगुरुवर्यकृपैकपात्राम्

क्षान्त्याद्यनन्तगुणपूरितहृत्सरोजम्

श्रीरंगसूरिमनघं शरणं प्रपद्ये ।।

श्री श्री १००८ श्री रंगचार्य स्वामीजी महाराज की मंगलशासनम्

श्रीरामाचार्यस्य कृपयावेदान्तद्वयपरिणे ।

जनोद्धारप्रसजाय श्रीरंगचार्य मंगलम् ।।

चन्द्रभगानदी तीरे पाण्डुरंगपूरे शुभे।
श्रीरामवाटिकास्थाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
श्री द्वये चरमे मूले कञ्जे षट्पदरूपिणे।
तद्दिव्यार्थैकनिष्ठाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
सायंप्रातरहंनक्तं भृत्यैत्यागपार्थिभिः।
शिष्यैः सेब्यपदाब्जाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
कलिधर्मविनाशाय पाषण्डद्रुमखण्डिने।
दिब्यसूरिस्वरूपाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
श्री रामार्यकृपालक्ष्मीप्रपन्नार्यपदाब्जयोः।
चंचरीक स्वरूपाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
श्री रामानुजदासानां चरणम्बुजरेणुके।
नित्यमार्तप्रपर्णाय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
अहर्नक्तं जनेभ्यस्तु मुरारेः पददेशीने।
तदर्ब्धेङ्घ्रिजचित्ताय श्रीरंगाचार्य मंगलम्।
दिव्यांप्रपत्तिमिह स्वस्त्यनं पदं श्रीरंग1यदेशिकगुरोः सरतां जनानम्
सब्यं यशश्च परमं पदमुत्तमञ्च
स्याद्दीनबन्धुभगवत्कृपयान्तिमे तु ॥
श्री सोलापूरपत्तणद्युतिभृनोह्यत्यद्भुतानन्दद श्रीरामानुजकोटकस्थजगवल्लक्ष्मीपतेः स्वमिनः।
वात्सष्यादिगुण क गानगतिना पद्यं विरत्यार्पितं
सीतारामप्रपन्नकेन पदयोः श्रीरंगदिब्याब्जयोः ॥

॥ मंगलशासनं समाप्तम् ॥

श्रीमाते रामानुजाय नमः

श्री श्री १००८ श्री रंगचार्य स्वामीजी महाराज की प्रपत्तिस्तोत्रम्

श्रीरामसूरिपद पकंजचञ्चरीकं लक्ष्मीप्रपनन्नगुरुमानसराजहंसम्
पापप्रलीनजगदुगुचरणावतीर्ण श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।।
श्रीदिव्यधामवर पण्ढरपूरनिवासं गोविन्दसुरिमुखसेवितपादपद्मम् ।
श्री केश्वादिनिजमृत्यगणस्तुतं तं श्री श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।।
श्री वैष्णवागमनतोयदसहिर्णं तद्दर्शनार्थमतिपूर्णत्तया चरन्तम् ।
कैंकर्यबृद्धिमनिशं बहु भावयन्तं श्री रंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
स्वीगादिपंकजायुगश्रितकामदं तं श्रीरामसूरिकृपायाप्रवरस्तवं तम् ।
पुण्ड्रेपुतैश्च खलु द्वादशभिर्युतं तं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
आचार्यनिष्ठजनपंक्तिपुरःस्थितं तमास्वारसूक्तिमनिशं मनसा स्मरन्तम् ।
वात्सष्यकादिबहुदिव्यगुणर्णवन्तं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
श्रीमन्नरत्नसुसरोरूहषट्पदन्तं स्वीयासंश्रितब्जदिवाकरन्तम् ।
अगोचुत चरणयोरधनाहायन्तं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
श्रीपाण्डरंगपुरवासकृतोसवन्तं तां पयादि जगदुःखमोचनं तम् ।
श्री वैष्णवाम्बुनिहिपूर्ण निशाकरन्तं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
निःशेषनाशकदशेन्द्रिय निहितं तं कामादिदोषरहितंन्तु विरक्तराजम् ।
श्रीवैष्णवेषु निरतंनिद्धिवासरन्तं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
लक्ष्मीप्रपर्णगुरुवर्यकृपैकपात्रं तद्दिव्यरुपगुणजकृपैकशीलम् ।
वेदान्तयुग्मविशदीकरणप्रवीणं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।
लक्ष्मीनिवासचरिसामृतावारिमञ्च कामाद्यनेकरिपुतूजभयानलन्तम् ।
सार्थद्वयानुभवहर्वितरोमगात्रं श्रीरंगदेशिकमहं शरणं प्रपद्ये ।

प्रपत्ति समाप्ता

श्री श्री १००८ श्री पुरूषोत्तमाचार्य स्वामीजी की तनया

श्री रंगदेशिककृपापरलब्धसिद्धिम्
संसाररोगपरिहारके वैद्य रत्नम्
श्रीकौशिकान्वयमहोदधीपूर्णचन्द्रम्
श्रीरामबागपुरूषोत्तम्मार्यमीडे ।।

श्रीवेङ्कटेशसुप्रभातम्

श्रीमते रामानुजाय नमः ।

कौशल्यासुप्रजाराम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ।। १ ।।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ।। २ ।।

मातः समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यरूपे ।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम् ।। ३ ।।

तव सुप्रभातमरविंदलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचंद्रमण्डले ।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ।। ४ ।।

अत्र्यादिसप्त ऋषयस्समुपास्य सन्ध्यां
आकाशसिंधुकमलानि मनोहराणि ।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ५ ।।

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवंति ।

भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ६ ।।

ईषत्प्रफुल्लसरसीरुहनारिकेल-
पूगद्रुमादिसुमनोहरपालिकानाम् ।
आवाति मन्दमनिलः सह दिव्यगन्धैः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ७ ।।

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ८ ।।

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि ।
भाषासमग्रमधुकृत्करचारुरम्यं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ९ ।।

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
झङ्कारगीतनिनदैः सह सेवनाय ।
निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। १० ।।

योषागणेन वरदध्नि विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः ।
रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः

शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। ११ ।।

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या ।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रघोषं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ।। १२ ।।

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो ।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १३ ।।

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोर्थिनो हरविरिंचिसनन्दनाद्याः ।
द्वारे वसंति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १४ ।।

श्रीशेषशैलगरुडाचलवेङ्कटाद्रि-
नारायणाद्रिवृषभाद्रिवृषाद्रिमुख्यान् ।
आख्यां त्वदीयवसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १५ ।।

सेवापराः शिवसुरेशकृशानुधर्म-
रक्षोम्बुनाथपवमानधनाधिनाथाः ।
बद्धाञ्जलिप्रविलसन्निजशीर्षदेशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १६ ।।

धाटीषु ते विहगराजमृगाधिराज-
नागाधिराजगजराजहयाधिराजाः ।
स्वस्वाधिकारमहिमाधिकमर्थयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १७ ।।

सूर्येन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यसौरि-
स्वर्भानुकेतुदिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
त्वद्दासदासचरमावधिदासदासाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १८ ।।

त्वत्पादधूलिभरतिस्फुरितोत्तमांगाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्षनिजान्तरंगाः ।
कल्पागमाकलितयाकलितां लभन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। १९ ।।

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीपदमाश्रयन्ते ।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २० ।।

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते ।
श्रीमन्ननन्तगरुडादिभिरर्चितांघ्रे
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २१ ।।

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव

वैकुंठ माधव जनार्दन चक्रपाणे ।
श्रीवत्सचिह्न शरणागतपारिजात
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २२ ।।

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्त्ते
कान्ताकुचाम्बुरुहकुड्मललोलदृष्टे ।
कल्याणनिर्मलगुणाकरदिव्यकीर्त्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २३ ।।

मीनाकृते कमठकोलनृसिंहवर्णिन्
स्वामिन्परश्वथतपोधन रामचन्द्र ।
शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २४ ।।

एलालवंगघनसारसुगन्धतीर्थं
दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम् ।
धृत्वाद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठन्ति वेङ्कटापते तव सुप्रभातम् ।। २५ ।।

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहंगाः ।
श्रीवैष्णवाः सततमंगलमर्थितास्ते
धामाश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम् ।। २६ ।।

ब्रह्मादयः सुरवरास्समहर्षयस्ते
सन्तस्सनन्दनमुखास्त्वथ योगिवर्याः ।

धामान्तिके तव हि मंगलवस्तुहस्ताः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २७ ।।

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
संसारसागरसमुत्तरणैकसेतो ।
वेदान्तवेद्यनिजवैभवभक्तभोग्य
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ।। २८ ।।

इत्थं वृषाचलपते तव सुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
तेषां प्रभातसमये स्मृतिरंगभाजां
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते ।। २९ ।।

।। इति श्रीवेङ्कटेशसुप्रभातं सम्पूर्णम् ।।

श्री वेङ्कटेशस्तोत्रम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

कमलाकुचचूचुककुङ्कुमतो
नियतारुणितातुलनीलतनो ।
कमलायतलोचनलोकपते
विजयी भव वेङ्कटशैलपते ।। १ ।।

सचतुर्मुखषण्णमुखपञ्चमुख-
प्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे ।
शरणागतवत्सलसारनिधे

परिपालय मां वृषशैलपते ।। २ ।।

अतिवेलतया तव दुर्विषयै-
रतिवेलकृतैरपराधशतैः ।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते
परया कृपया परिपाहि हरे ।। ३ ।।

अधिवेङ्कटशैलमुदारमते-
जनताभिमताधिकदानरतात् ।
परदेवतया कथितान्निगमैः
कमलादयितान्न परं कलये ।। ४ ।।

कलवेणुरवावशगोपवधू-
शतकोटिवृतात् स्मरकोटिसमात् ।
प्रतिबल्लविचाभिमतात् सुखतात्
वसुदेवसुतान्न परं कलये ।। ५ ।।

अभिरामगुणाकर दाशरथे
जगदेकधनुर्धर धीरमते ।
रघुनायक राम रमेश विभो
वरदो भव देव दयाजलधे ।। ६ ।।

अवनीतनयाकमनीयवरं
रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहम् ।
रजनीचरराजितमोमिहिरं
महनीयमहं रघुराममये ।। ७ ।।

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं
सुजनं वसुजातममोघशरम् ।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहं
न कथञ्चन कञ्चन जातु भजे ।। ८ ।।

विनावेङ्कटेशं न नाथो न नाथः
सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मारामि ।
हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद
प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ ।। ९ ।।

अहं दूरतस्थः पदाम्भोजयुग्म-
प्रणामेच्छया नित्यसेवां करोमि ।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वं
प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश ।। १०।।

अज्ञानिना मया दोषान-
शेषान् विहितान् हरे ।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं
शेषशैलशिखामणे ।। ११ ।।

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीं
तद्वक्षःस्थलनित्यवासरसिकां तत्क्षान्तिसंवर्धिनीम् ।
पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ।।१२।।

।। इति श्री वेंकटेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीवरवरमुनिविरचिता

यतिराजविंशतिः

श्रीमते रामानुजाय नमः

यः स्तुतिं यतिपतिप्रसादिनीं
व्याजहार यतिराजविंशतिम् ।
तं प्रपन्नजनचातकाम्बुदं नौमि
सौम्यभवयोगिपुङ्गवम् ।।

श्रीमाधवांघ्रिजलजद्वयनित्यसेवा-
प्रेमाविलाशयपराङ्कुशपादभक्तम् ।
कामादिदोषहरमात्मपदाश्रितानां
रामानुजं यतिपतिं प्रणमामि मूर्घ्ना ।। १ ।।

श्रीरंगराजचरणाम्बुजराजहंसं
श्रीमत्परांकुशपदाम्बुजभृङ्गराजम् ।
श्रीभट्टनाथपरकालमुखाब्जमित्रं
श्रीवत्सचिह्नशरणं यतिराजमीडे ।। २ ।।

वाचा यतीन्द्र मनसा वपुषा च युष्म-
त्पादारविन्दयुगलं भजतां गुरूणाम् ।
कूराधिनाथकुरुकेशमुखाद्यपुंसां
पादानुचिन्तनपरः सततं भवेयम् ।। ३ ।।

नित्यं यतीन्द्र तव दिव्यवपुःस्मृतौ मे

सक्तं मनो भवतु वाग्गुणकीर्त्तनेऽसौ ।
कृत्यं च दास्यकरणं तु करद्वयस्य
वृत्त्यन्तरेऽस्तु विमुखं करणत्रयं च ।। ४ ।।

अष्टाक्षराख्यमनुराजपदत्रयार्थ-
निष्ठां ममात्र वितराद्य यतीन्द्र नाथ ।
शिष्टाग्रगण्यजनसेव्य भवत्पदाब्जे
हृष्टाऽस्तु नित्यमनुभूय ममास्य बुद्धिः ।। ५ ।।

अल्पापि मे न भवदीयपदाब्जभक्तिः
शब्दादिभोगरुचिरन्वहमेधते ह ।
मत्पापमेव हि निदानममुष्य नान्य-
त्तद्वारयार्य यतिराज दयैकसिन्धो ।। ६ ।।

वृत्त्या पशुर्नरवपुस्त्वहमीदृशोऽपि
श्रुत्यादिसिद्धनिखिलात्मगुणाश्रयोऽयम् ।
इत्यादरेण कृतिनोऽपि मिथः प्रवक्तु-
मद्यापि वञ्चनपरोऽत्र यतीन्द्र वर्ते ।। ७ ।।

दुःखावहोऽहमनिशं तव दुष्टचेष्टः
शब्दादिभोगनिरतः शरणागताख्यः ।
त्वत्पादभक्त इव शिष्टजनौघमध्ये
मिथ्या चरामि यतिराज ततोऽस्मि मूर्खः ।। ८ ।।

नित्यं त्वहं परिभवामि गुरुं च मन्त्रं
तद्देवतामपि न किंचिदहो बिभेमि ।

इत्थं शठोऽप्यशठवद्भवदीयसङ्घे
हृष्टश्चरामि यतिराज ततोऽस्मि मूर्खः ॥ ९ ॥

हा हन्त हन्त मनसा क्रियया च वाचा
योऽहं चरामि सततं त्रिविधापचारान् ।
सोऽहं तवाऽप्रियकरः प्रियकृद्वदेव
कालं नयामि यतिराज ततोऽस्मि मूर्खः ॥ १० ॥

पापे कृते यदि भवन्ति भयानुताप-
लज्जाः पुनः करणमस्य कथं घटेत ।
मोहेन मे न भवतीह भयादिलेश-
स्तस्मात्पुनः पुनरघं यतिराज कुर्वे ॥ ११ ॥

अन्तर्बहिः सकलवस्तुषु सन्तमीश-
मंधः पुरःस्थितमिवाहमवीक्षमाणः ।
कंदर्पवश्यहृदयः सततं भवामि
हन्त त्वदग्रगमनस्य यतीन्द्रनार्हः ॥ १२ ॥

तापत्रयीजनितदुःखनिपातिनोऽपि
देहस्थितौ मम रुचिस्तु न तन्निवृत्तौ ।
एतस्य कारणमहो मम पापमेव
नाथ त्वमेव हर तद्यतिराज शीघ्रम् ॥ १३ ॥

वाचामगोचर महागुण देशिकाग्र्य
कूराधिनाथ कथिताऽखिलनैच्यपात्रम् ।
एषोऽहमेव न पुनर्जगतीदृशस्त-
द्रामानुजार्य करुणैव तु मद्गतिस्ते ॥ १४ ॥

शुद्धात्मयामुनगुरूत्तम कूरनाथ
भट्टाख्यदेशिकवरोक्तसमस्तनैच्यम् ।
अद्याऽस्त्यसंकुचितमेव मयीह लोके
तस्माद्यतीन्द्र करुणैव तु मद्गतिस्ते ।। १५ ।।

शब्दादिभोगविषया रुचिरस्मदीया
नष्टा भवत्विह भवद्दयया यतीन्द्र ।
त्वद्दासदासगणनाचरमावधौ
यस्तद्दासतैकरसताऽविरता ममास्तु ।। १६ ।।

श्रुत्यग्रवेद्यनिजदिव्यगुणस्वरूपः
प्रत्यक्षतामुपगतस्त्विह रंगराजः ।
वश्यः सदा भवति ते यतिराज तस्मा-
च्छक्तः स्वकीयजनपापविमोचने त्वम् ।। १७ ।।

कालत्रयेऽपि करणत्रयनिर्मितातिपापक्रियस्य शरणं भगवत्क्षमैव ।
सा च त्वयैव कमलारमणेऽर्थिता यक्षेमः
स एव हि यतीन्द्र भवच्छ्रितानाम् ।। १८ ।।

श्रीमन् यतीन्द्र तवदिव्यपदाब्जसेवां
श्रीशैलनाथकरुणापरिणामदत्ताम् ।
तामन्वहं मम विवर्द्धय नाथ तस्याः
कामं विरुद्धमखिलं च निवर्त्तयत्वम् ।। १९ ।।

विज्ञापनं यदिदमद्य तु मामकीन-
मंगीकुरुष्व यतिराज दयाम्बुराशे ।

अज्ञोऽयमात्मगुणलेशविवर्जितश्च
तस्मादनन्यशरणो भवतीति मत्वा ।। २० ।।

इति यतिकुलधुर्यमेधमानैः श्रुति-
मधुरैरुदितैः प्रहर्षयन्तम् ।
वरवरमुनिमेव चिन्तयन्ती मति-
रियमेति निरत्ययं प्रसादम् ।।

।। इति श्रीयतिराजविंशतिः सम्पूर्णा ।।

स्तुतिः

हे राम पुरुषोत्तम नरहरे नारायण केशव, गोविन्द, गरुडध्वज गुणनिधे-दामोदर, माधव, हे कृष्ण, कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते, हे वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ।। १ ।।

आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनं ।
वैदेहिहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरीदाहनम्
पश्चाद् रावणकुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम् ।। २ ।।

आदौ देवकीदेविगर्भजननं, गोपीगृहे वर्द्धनम्
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनं
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलमृतम् ।। ३ ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।। ४ ।।

बार-बार वर माँगऊँ हरषि देऊँ श्रीरंग ।
पदसरोज अनपायिनी भक्ति सदासंत्संग ।। ५ ।।

सीयावर रामचन्द्रजी की जय, पवनसुत हनुमान जी की जय ।

स्तुतिः

भयेप्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हरिषति महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूपनिहारी ।। १ ।।
लोचन अभिरामा तनुघनश्यामा निज आयुधभुजचारी ।
भूषन वनमाला नयनविशाला शोभा सिन्धु स्वरारी ।
कह दुइ करजोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करहुं अनंता ।
मायागुनग्यानातीत अमाना वेदपुरान भनंता ।। २ ।।

करुना सुख सागर सबगुनआगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो ममहितलागी जन अनुरागी भय उ प्रगटश्रीकंता ।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोमरोम प्रतिवेद कहे ।
मम उरसोवासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहे ।। ३ ।।

उपजा जबज्ञाना प्रभुमुसकाना चरितबहुतबिधकीन्हचहे ।
कहिकथा सुहाईमातु बुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहे ।
मातापुनिबोली सोमति डोली तजहुतात यह रूपा ।
कीजेशिशुलीला अतिप्रियशीला यह सुखपरम अनूपा ।। ४ ।।

सुनिवचनसुजाना रोदनठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरितजेगावहिं हरिपदपावहिं ते न परहिं भवकूपा ।

दोहा-विप्रधेनु सुरसंतहित लीन मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मिततनु माया गुन गोपार ।। ५ ।।

।। सियावर रामचन्द्र जी की जय ।।

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री १०८ गोदास्तुतिः

सर्वंसहे तुलसिमूलकृतावतारे
श्रीविष्णुचित्तपरितोषितबाल्यवृत्ते ।
श्रीरंगराजकरपद्मगृहीतपाणे ।
गोदे नमोऽस्तु सततं जगदंब तुभ्यम् ।। १ ।।

नित्या भूषा निगमशिरसां निःसमोत्तुंगवार्ता
कांतो यस्याः कचविलुलितैः कामुको माल्यरत्नैः ।
सूक्त्या यस्याः श्रुतिसुभगया सुप्रभाता धरित्री
सैषा देवी सकलजननी सिंचतां मामपांगैः ।। २ ।।

माता चेत्तुलसी पिता यदि तव श्रीविष्णुचित्तो महान्
भ्राता चेद्यतिशेखरः प्रियतमः श्रीरंगधामा यदि ।
ज्ञातारस्तनयास्त्वदुक्तिसरसस्तन्येन संवर्धिताः
गोदे त्वं हि कथं त्वनन्यविभवा साधारणश्रीरसि ।। ३ ।।

कल्पादौ हरिणा स्वयं जनहितं कृष्णेन सर्वात्मना
प्रोक्तं स्वस्य च कीर्तनम् प्रपदनं स्वस्मै प्रसूनार्पणम् ।
सर्वेषां प्रकटं विधातुमनिशं श्रीधन्विनव्ये पुरे

जातां वैदिकविष्णुचित्ततनयां गोदामुदारां स्तुमः ।। ४ ।।

आकूतस्य परिष्क्रियां निरुपमामासेचनं चक्षुषोः
आनंदांशपरंपरामनुगुणामारामशैलेशितुः ।
तद्भीरत्वकिरीटकोटिघटितस्वोच्छिष्टकस्तूरिका
माल्यामोदसमेधितात्मविभवां गोदामुदारां स्तुमः ।। ५ ।।

।। इति श्रीगोदास्तुतिः सम्पूर्णा ।।

श्रीश्रीस्तवः

स्वस्ति श्रीर्दिशतादशेषजगतां सर्गोपवर्गस्थितीः
स्वर्गं दुर्गतिमापवर्गिकपदं सर्वं च कुर्वन् हरिः ।
यस्या वीक्ष्यमुखं तदिङ्गितपराधीनो विधत्तेऽखिलं,
क्रीडेयं खलु नान्यथाऽस्य रसदा स्यादैकरस्यात्तया ।। १ ।।

हे श्रीदेवि समस्तलोकजननीं त्वां स्तोतुमीहामहे
युक्तां भावय भारतीं प्रगुणय प्रेमप्रधानां धियम् ।
भक्तिं वर्धय नंदयाश्रितमिमं दासं जनं तावकं लक्ष्यं
लक्ष्मि कटाक्षवीचिविसृतेस्ते स्याम चामीवयम् ।। २ ।।

स्तोत्रं नाम किमामनन्ति कवयो यद्यन्यदीयान् गुणान-
न्यत्र त्वसतोऽधिरोष्य भणितिः सा तर्हि वन्ध्यात्वयि ।
सम्यक्सत्यगुणाभिवर्णनमथो ब्रुयुः कथं तादृशी
वाग्वाचस्पतिनापि शक्यरचना त्वत्सद्गुणार्णोनिधौ ।। ३ ।।

ये वाचां मनसां च दुर्ग्रहतया ख्याता गुणास्तावका-
स्तानेव प्रति सम्बुजिह्वमुदिता यन्मामिका भारती ।
हास्यं तत्तु न मन्महे नहि चकोर्येकाखिलां चन्द्रिकां

नालं पातुमिति प्रगृह्य रसनामासीत सत्यां तृषि ।। ४ ।।

क्षोदीयानपि दुष्टबुद्धिरपि निःस्नेहोऽप्यनीहोऽपिते
कीर्तिं देवि लिहन्नहं न च बिभेम्यज्ञो न जिह्रेमि च ।
दुष्येत्सा तु न तावता नहि शुनालीढाऽपि भागीरथी
दुष्येच्छ्वापि न लज्जते न च बिभेत्यार्तिस्तु शाम्येच्छुनः ।। ५ ।।
ऐश्वर्यं महदेव वाल्पमथवा दृश्येत पुंसां हि य-
त्तल्लक्ष्म्याः समुदीक्षणात्तव यतः सार्वत्रिकं वर्त्तते ।
तेनैतेन न विस्मयेमहि जगन्नाथोऽपि नारायणो
धन्यं मन्यत ईक्षणात्तव यतः स्वात्मानमात्मेश्वरः ।। ६ ।।

ऐश्वर्यं यदशेषपुंसि यदिदं सौन्दर्य्यलावण्ययो-
रूपं यच्च हि मंगलं किमपि यल्लोके सदित्युच्यते ।
तत्सर्वं त्वदधीनमेव हि यतः - श्रीरत्यिभेदेन वा
यद्वा श्रिमदितिदृशेन वचसा देवि प्रथामश्नुते ।। ७ ।।

देवि त्वन्महिमावधिर्न हरिणा नापि त्वया ज्ञायते,
यद्यप्येवमथापि नैव युवयोः सर्वज्ञता हीयते ।
यन्नास्त्येव तदज्ञतामनुगुणां सर्वज्ञताया, विदु-
र्व्योमाम्भोजमिदन्तया खलु विदन् भ्रान्तोऽयमित्युच्यते ।। ८ ।।

लोके वनस्पतिबृहस्पतितारतम्यं
यस्याः कटाक्षपरिणाममुदाहरंति ।
सा भारती भगवती तु यदीयदासी
तां देवदेवमहिषीं श्रियमाश्रयामः ।। ९ ।।

यस्याः कटाक्षमृदुवीक्षणवीक्षणेन
सद्यस्समुल्लसितपल्लवमुल्ललास ।

विश्वं विपर्ययसमुत्थविपर्ययं प्राक्
तान्देवदेवमहिषीं श्रियमाश्रयामः ।। १० ।।

।। इति श्री श्रीस्तवः समाप्तः ।।

सुमङ्गलस्तोत्रम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

सुमंगलं मंगलमीश्वराय ते सुमंगलं मंगलमच्युताय ते ।
सुमंगलं मंगलमन्तरात्मने सुमंगलं मंगलमब्जनाभ ते ।। १ ।।

सुमंगलं श्रीनिलयोरुवक्षसे सुमंगलं पद्मभवादिसेविते ।
सुमंगलं पद्मजगन्निवासिने सुमंगलं चाश्रितमुक्तिदायिने ।। २ ।।

चाणूरदर्पघ्नसुबाहुदण्डयोः सुमंगलं मंगलमादिपूरुषे ।
बालार्क्ककोटीप्रतिमाय ते विभो चक्राय दैत्येन्द्रविनाशहेतवे ।। ३ ।।

शंखाय कोटीन्दुसमानतेजसे शार्ङ्गाय रत्नोज्ज्वलदिव्यरूपिणे ।
खड्गाय विद्यामयविग्रहाय ते सुमंगलं मंगलमस्तु ते विभो ।। ४ ।।

तदावयोस्तत्वविशिष्टशेषिणे शेषित्वसम्बन्धनिबोधनाय ते ।
यन्मंगलानां च सुमंगलाय ते पुनः पुनर्मङ्गलमस्तु सन्ततम् ।। ५ ।।

।। इति श्रीविष्णुचित्तस्वामिकृतं सुमंगलस्त्रोत्रं सम्पूर्णम् ।।

पञ्चायुधस्तोत्रम्

स्फुरत्सहस्रारशिखातितीव्रं सुदर्शनं भास्करकोटितुल्यम् ।
सुरद्विषा प्राणविनाशिविष्णोश्चक्रं सदाहं शरणं प्रपद्ये ।। १ ।।

विष्णोर्मुखोत्थानिलपूरितस्य यस्य ध्वनिर्हानवदर्पहन्ता ।
तं पाञ्चजन्यं शशिकोटिशुभ्रं शंखं सदाहं शरणं प्रपद्ये ।। २ ।।

हिरण्मयीं मेरुसमानसारां कौमोदकीं दैत्यकुलैकहंत्रीम् ।
वैकुण्ठवामाग्रकराभिमृष्टां गदां सदाहं शरणं प्रपद्ये ।। ३ ।।

रक्षोऽसुराणां कठिनोग्रकण्ठच्छेदक्षरच्छोणितदिग्धधारम् ।
तं नन्दकं नाम हरेः प्रदीप्तं खड्गं सदाहं शरणं प्रपद्ये ।। ४ ।।

यज्ज्यानिनादश्रवणात्सुराणां चेतांसि निर्मुक्तभयानि सद्यः ।
भवन्ति दैत्याशनिबाणवर्षि शार्ङ्गं सदाहं शरणं प्रपद्ये ।। ५ ।।

इमं हरेः पञ्चमहायुधानां स्तवं पठेद्योऽनुदिनं प्रभाते ।
समस्तदुःखानि भयानि सद्यः पापानि नश्यन्ति सुखानि संति ।। ६ ।।

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये यदृच्छयापत्सु महाभयेषु ।
इदं पठन् स्तोत्रमनाकुलात्मा सुखी भवेत्तत्कृतसर्वरक्षः ।। ७ ।।

भोगे रोगभयं सुखे क्षयभयं वित्ते च राज्ञो भयं
विद्यायां कलिभीस्तपे करणभी रूपाद्भयं योषिति ।

इष्टे शोकभयं रणे रिपुभयं काये कृतान्ताद्भयं चेत्थं
जन्म निरर्थकं क्षितितले विष्णोः पदं निर्भयम् ।। ८ ।।

।। इति पंचायुधस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रम्

श्रीपरमात्मने नमः

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते, महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। १ ।।

नमस्ते गरुडारूढे, कोलासुरभयंकरि ।
सर्वपापहरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। २ ।।

सर्वज्ञे सर्ववरदे, सर्वदुष्टभयंकरि ।
सर्वदुःखहरे-देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ३ ।।

सिद्धि बुद्धि-प्रदे देवि, भक्ति-मुक्ति प्रदायिनि ।
मन्त्र-मूर्ते सदा देवि, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ।। ४ ।।

आद्यन्तरहिते देवि, आदिशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसंभूते, महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ५ ।।

स्थूलसूक्ष्मे महारौद्रे, महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ६ ।।

पद्मासनस्थिते देवि, परब्रह्म स्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ७ ।।

श्वेताम्बरधरे देवि, नानालंकारभूषणे ।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ८ ।।

महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं य पठेत् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।

एककाले पठेन्नित्यं, महापापविनाशनम् ।
द्विकाले यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितम् ।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।

।। इति श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः

पुना कापड गंज श्रीरामचन्द्र भगवान की तनिया ।
नेत्रव्योमनिधिचन्द्रे विक्रमाब्दे शुभे दिने ।
जेष्ठमासे सिते पक्षे, द्वादश्यां चन्द्रवासरे ।।
युग्मेऽर्के स्वाति नक्षत्रे सीतारामं सलक्ष्मणम् ।
श्रेष्ठिना रामभक्तेन स्थापितं पुण्यपत्तने ।।
आननाङ्किततिलकेन राजितं राम मण्डलम् ।
पुरतो स्वञ्जलिबद्धं वायुपुत्रमुपास्महे ।।

हयग्रीवस्तोत्रम्

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलस्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ।। १ ।।

स्वतस्सिद्धं शुद्धस्फटिकमणिभूभृत्प्रतिभटं
सुधासध्रीचीभिर्द्युतिभिरवदातत्रिभुवनम् ।
अनन्तैस्त्रय्यन्तैरनुविहित हेषाहलहलं
हताशेषावद्यं हयवदनमीडीमहि महः ।। २ ।।

समाहारस्साम्नां प्रतिपदमृचां धाम यजुषां
लयः प्रत्यूहानां लहरिविततिर्बोधजलधेः ।
कथादर्पक्षुभ्यत्कथककुलकोलाहलभवं
हरत्वन्तर्ध्वान्तं हयवदनहेषाहलहलः ।। ३ ।।

प्राची सन्ध्या काचिदन्तर्निशायाः
प्रज्ञादृष्टेरञ्जनश्रीरपूर्वा ।
वक्त्री वेदान् भातु मे वाजिवक्त्रा
वागीशाख्या वासुदेवस्य मूर्तिः ।। ४ ।।

विशुद्धविज्ञानघनस्वरूपं
विज्ञानविश्राणनबद्धदीक्षम् ।
दयानिधिं देहभृतां शरण्यं
देवं हयग्रीवमहं प्रपद्ये ।। ५ ।।

अपौरुषेयैरपि वाक्प्रपञ्चैः
अद्यापि ते भूतिमदृष्टपाराम् ।
स्तुवन्नहं मुग्ध इति त्वयैव
कारुण्यतो नाथ! कटाक्षणीयः ।। ६ ।।

दाक्षिण्यरम्या गिरिशस्य मूर्तिः
देवी सरोजासनधर्मपत्नी ।
व्यासादयोऽपि व्यपदेश्यवाचः
स्फुरन्ति सर्वे तव शक्तिलेशैः ।। ७ ।।

मन्दोऽभविष्यन्नियतं विरिञ्चो

वाचां निधे! वञ्चितभागधेयः ।
दैत्यापनीतान् दययैव भूयोऽपि
अध्यापयिष्यो निगमान् न चेत् त्वम् ।। ८ ।।

वितर्कडोलां व्यवधूय सत्त्वे
बृहस्पतिं वर्तयसे यतस्त्वम् ।
तेनैव देव! त्रिदशेश्वराणाम्
अस्पृष्टडोलायितमाधिराज्यम् ।। ९ ।।

अग्नौ समिद्धार्चिषि सप्ततन्तोः
आतस्थिवान् मन्त्रमयं शरीरम् ।
अखण्डसारैर्हविषां प्रदानैः
आप्यायनं व्योमसदां विधत्से ।। १० ।।

यन्मूलमीदृक्प्रतिभाति तत्त्वं
या मूलमाम्नायमहाद्रुमाणाम् ।
तत्त्वेन जानन्ति विशुद्धसत्त्वाः
त्वामक्षरामक्षरमातृकां ते ।। ११ ।।

अव्याकृताद् व्याकृतवानसि त्वं
नामानि रूपाणि च यानि पूर्वम् ।
शंसन्ति तेषां चरमां प्रतिष्ठां
वागीश्वर! त्वां त्वदुपज्ञवाचः ।। १२ ।।

मुग्धेन्दुनिष्यन्दविलोभनीयां
मूर्तिं तवानन्दसुधाप्रसूतिम् ।
विपश्चितश्चेतसि भावयन्ते

वेलामुदारामिव दुग्धसिन्धोः ।। १३ ।।

मनोगतं पश्यति यस्सदा त्वां
मनीषिणां मानसराजहंसम् ।
स्वयं पुरोभावविवादभाजः
किंकुर्वते तस्य गिरो यथार्हम् ।। १४ ।।

अपि क्षणार्धं कलयन्ति ये त्वाम्
आप्लावयन्तं विशदैर्मयूखैः ।
वाचां प्रवाहैरनिवारितैस्ते
मन्दाकिनीं मन्दयितुं क्षमन्ते ।। १५ ।।

स्वामिन्! भवद्ध्यानसुधाभिषेकात्
वहन्ति धन्याः पुलकानुबन्धम् ।
अलक्षिते क्वापि निरूढमूलम्
अङ्गेष्विवानन्दथुम् अंकुरन्तम् ।। १६ ।।

स्वामिन्! प्रतीचा हृदयेन धन्याः
त्वद्ध्यानचन्द्रोदयवर्धमानम् ।
अमान्तमानन्दपयोधिमन्तः
पयोभिरक्ष्णां परिवाहयन्तिं ।। १७ ।।

स्वैरानुभावास्त्वदधीनभावाः
समृद्धवीर्यास्त्वदनुग्रहेण ।
विपश्चितो नाथ! तरन्ति मायां
वैहारिकीं मोहनपिञ्छिकां ते ।। १८ ।।

प्राङ्निर्मितानां तपसां विपाकाः
प्रत्यग्रनिःश्रेयससंपदो मे ।
समेधिषीरंस्तव पादपद्मे
संकल्पचिन्तामणयः प्रणामाः ॥ १९ ॥

विलुप्तमूर्धन्यलिपिक्रमाणां
सुरेन्द्रचूडापदलालितानाम् ।
त्वदंघ्रिराजीवरजःकणानां
भूयान् प्रसादो मयि नाथ! भूयात् ॥ २० ॥

परिस्फुरन्नूपुरचित्रभानु
प्रकाशनिर्धूततमोनुषङ्गाम् ।
पदद्वयीं ते परिचिन्महेऽन्तः -
प्रबोधराजीवविभातसन्ध्याम् ॥ २१ ॥

त्वत्किङ्करालंकरणोचितानां
त्वयैव कल्पान्तरपालितानाम् ।
मञ्जुप्रणादं मणिनूपुरं ते
मञ्जूषिकां वेदगिरां प्रतीमः ॥ २२ ॥

संचिन्तयामि प्रतिभादशास्थान्
संधुक्षयन्तं समयप्रदीपान् ।
विज्ञानकल्पद्रुमपल्लवाभं
व्याख्यानमुद्रामधुरं करं ते ॥ २३ ॥

चित्ते करोमि स्फुरिताक्षमालं
सव्येतरं नाथ! करं त्वदीयम् ।

ज्ञानामृतोदञ्चनलम्पटानां
लीलाघटीयन्त्रमिवाश्रितानाम् ।। २४ ।।

प्रबोधसिन्धोररुणैः प्रकाशैः
प्रवालसंघातमिवोद्वहन्तम् ।
विभावये देव! सपुस्तकं ते
वामं करं दक्षिणमाश्रितानाम् ।। २५ ।।

तमांसि भित्त्वा विशदैर्मयूखैः
संप्रीणयन्तं विदुषश्चकोरान् ।
निशामये त्वां नवपुण्डरीके
शरद्घने चन्द्रमिव स्फुरन्तम् ।। २६ ।।

दिशन्तु मे देव! सदा त्वदीयाः
दयातरङ्गानुचराः कटाक्षाः ।
श्रोत्रेषु पुंसाममृतं क्षरन्तीं
सरस्वतीं संश्रितकामधेनुम् ।। २७ ।।

विशेषवित्पारिषदेषु नाथ!
विदग्धगोष्ठीसमराङ्गणेषु ।
जिगीषतो मे कवितार्किकेन्द्रान्
जिह्वाग्रसिंहासनमभ्युपेयाः ।। २८ ।।

त्वां चिन्तयंस्त्वन्मयतां प्रपन्नः
त्वामुद्गृणन् शब्दमयेन धाम्ना ।
स्वामिन्! समाजेषु समेधिषीय
स्वच्छन्दवादाहवबद्धशूरः ।। २९ ।।

नानाविधानामगतिः कलानां
न चापि तीर्थेषु कृतावतारः ।
ध्रुवं तवानाथपरिग्रहायाः
नवं नवं पात्रमहं दयायाः ।। ३० ।।

अकम्पनीयान्यपनीतिभेदैः
अलंकृषीरन् हृदयं मदीयम् ।
शङ्काकलङ्कापगमोज्ज्वलानि
तत्त्वानि सम्यञ्चि तव प्रसादात् ।। ३१ ।।

व्याख्यामुद्रां करसरसिजैः पुस्तकं शङ्खचक्रे
बिभ्रद्भिन्नस्फटिकरुचिरे पुण्डरीके निषण्णः ।
अम्लानश्रीरमृतविशदैरंशुभिः प्लावयन् माम्
आविर्भूयादनघमहिमा मानसे वागधीशः ।। ३२ ।।

वागर्थसिद्धिहेतोः पठत
हयग्रीवसंस्तुतिं भक्त्या ।
कवितार्किककेसरिणा
वेङ्कटनाथेन विरचितामेताम् ।। ३३ ।।

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ।।

।। इति श्रीहयग्रीवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

यामुनाचार्यप्रणितम्

स्तोत्ररत्नम्

स्वादयन्निह सर्वेषां त्रय्यन्तार्थं सुदुर्ग्रहम् ।
स्तोत्रयामास योगीन्द्रस्तं वन्दे यामुनाह्वयम् ।।

नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः
नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः ।।

नमो यामुनपादाब्जरेणुभिः पाविताात्मने ।
विदिताखिलवेद्याय गुरवे विदितात्मने ।।

नमोऽचिंत्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्यराशये ।
नाथाय मुनयेऽगाधभगवद्भक्तिसिन्धवे ।। १ ।।

तस्मै नमो मधुजिदंघ्रिसरोजतत्त्व-
ज्ञानानुरागमहिमातिशयान्तसीम्ने ।
नाथाय नाथमुनयेऽत्र परत्र चापि
नित्यं यदीयचरणौ शरणं मदीयम् ।। २ ।।

भूयो नमोऽपरिमिताच्युतभक्तितत्त्व-
ज्ञानामृताब्धिपरिवाहशुभैर्वचोभिः ।
लोकेऽवतीर्णपरमार्थसमग्रभक्ति-
योगाय नाथमुनये यमिनां वराय ।। ३ ।।

तत्त्वेन यश्चिदचिदीश्वरतत्स्वभाव-
भोगापवर्गतदुपायगतीरुदारः ।

संदर्शयन्निरमिमीत पुराणरत्नं
तस्मै नमो मुनिवराय पराशराय ॥ ४ ॥

माता पिता युवतयस्तनया विभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।
आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामं
श्रीमत्तदंघ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥ ५ ॥

यन्मूर्घ्नि मे श्रुतिशिरस्सु च भाति यस्मिन्
अस्मन्मनोरथपथस्सकलस्समेति
स्तोष्यामि नःमकुलधनं कुलदैवतं
तत्पादारविन्दमरविन्दविलोचनस्य ॥ ६ ॥

तत्त्वेन यस्य महिमार्णवशीकराणुः
शक्यो न मातुमपि शर्वपितामहाद्यैः ।
कर्तुं तदीयमहिमस्तुतिमुद्यताय
मह्यं नमोऽस्तु कवये निरपत्रपाय ॥ ७ ॥

यद्वा श्रमावधि यथामति वाऽप्यशक्तः
स्तौम्येवमेव खलु तेऽपि सदा स्तुवन्तः ।
वेदाश्चतुर्मुखमुखाश्च महार्णवान्तः
को मज्जतोरणुकुलाचलयोर्विशेषः ॥ ८ ॥

किंचैष शक्त्यतिशयेन न तेऽनुकंप्यः
स्तोताऽपि तु स्तुतिकृतेन परिश्रमेण ।
तत्र श्रमस्तु सुलभो मम मंदबुद्धे-
रित्युद्यमोऽयमुचितो मम चाब्जनेत्र ॥ ९ ॥

नावेक्षसे यदि ततो भुवनान्यमूनि
नालं प्रभो! भवितुमेव कुतः प्रवृत्तिः ।
एवं निसर्गसुहृदि त्वयि सर्वजन्तोः
स्वामिन्न चित्रमिदमाश्रितवत्सलत्वम् ।। १० ।।

स्वाभाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं
नारायण त्वयि न मृष्यति वैदिकः कः ।
ब्रह्मा शिवश्शतमखः परमस्स्वराडि-
त्येतेऽपि यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते ।। ११ ।।

कश्श्रीः श्रियः परमसत्त्वसमाश्रयः कः
कः पुंडरीकनयनः पुरुषोत्तमः कः ।
कस्यायुतायुतशतैककलांशकांशे
विश्वं विचित्रचिदचित्प्रविभागवृत्तम् ।। १२ ।।

वेदापहारगुरुपातकदैत्यपीडा
द्यापद्विमोचनमहिष्ठफलप्रदानैः ।
कोऽन्यः प्रजापशुपती परिपाति कस्य
पादोदकेन स शिवः स्वशिरोधृतेन ।। १३ ।।

कस्योदरे हरविरिञ्चिमुखः प्रपंचः
को रक्षतीममजनिष्ट च कस्य नाभेः ।
क्रान्त्वा निगीर्य पुनरुद्गिरति त्वदन्यः कः
केन वैष परवानिति शक्यशङ्कः ।। १४ ।।

त्वां शीलरूपचरितैः परमप्रकृष्ट
सत्त्वेन सात्त्विकतया प्रबलैश्च शास्त्रैः ।

प्रख्यातदैवपरमार्थविदां मतैश्च
नैवासुरप्रकृतयः प्रभवन्ति बोद्धुम् ।। १५ ।।

उल्लङ्घितत्रिविधसीमसमातिशायि
संभावनं तव परिब्रढिमस्वभावम् ।
मायाबलेन भवतापि निगुह्यमानं
पश्यन्ति केचिदनिशं त्वदनन्यभावाः ।। १६ ।।

यदण्डमण्डान्तरगोचरं च य-
द्दशोत्तराण्यावरणानि यानि च ।
गुणाः प्रधानं पुरुषः परं पदं
परात्परं ब्रह्म च ते विभूतयः ।। १७ ।।

वशी वदान्यो गुणवानृजुःशुचिर्
मृदुर्दयालुर्मधुरः स्थिरः समः ।
कृती कृतज्ञस्त्वमसि स्वभावतः
समस्तकल्याणगुणामृतोदधिः ।। १८ ।।

उपर्युपर्यब्जभुवोऽपि पूरुषान्
प्रकल्प्य ते ये शतमित्यनुक्रमात् ।
गिरस्त्वदेकैकगुणावधीप्सया
सदा स्थिता नोद्यमतोऽतिशेरते ।। १९ ।।

त्वदाश्रितानां जगदुद्भवस्थिति-
प्रणाशसंसारविमोचनादयः ।

भवन्ति लीलाविधयश्च वैदिका-
स्त्वदीयगम्भीरमनोनुसारिणः ।। २० ।।

नमो नमो वाङ्मनसातिभूमये ।
नमो नमो वाङ्मनसैकभूमये
नमो नमोऽनन्तमहाविभूतये
नमो नमोऽनन्तदयैकसिन्धवे ।। २१ ।।

न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे ।
अकिंचनोऽनन्यगतिश्शरण्य!
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ।। २२ ।।

न निन्दितं कर्म तदस्ति लोके
सहस्रशो यन्न मया व्यधायि ।
सोऽहं विपाकावसरे मुकुन्द!
क्रन्दामि संप्रत्यगतिस्तवाग्रे ।। २३ ।।

निमज्जतोऽनन्तभवार्णवान्त-
श्चिराय मे कूलमिवासि लब्धः ।
त्वयापि लब्धं भगवन्निदानी-
मनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः ।। २४ ।।

अभूतपूर्वं मम भावि किं वा
सर्वं सहे मे सहजं हि दुःखम् ।
किंतु त्वदग्रे शरणागतानां

पराभवो नाथ न तेऽनुरूपः ।। २५ ।।
निरासकस्यापि न तावदुत्सहे
महेश! हातुं तव पादपंकजम् ।
रुषा निरस्तोऽपि शिशुः स्तनन्धयो
न जातु मातुश्चरणौ जिहासति ।। २६ ।।

तवामृतस्यन्दिनि पादपङ्कजे
निवेशितात्मा कथमन्यदिच्छति ।
स्थितेऽरविन्दे मकरन्दनिर्भरे
मधुव्रतो नेक्षुरकं हि वीक्षते ।। २७ ।।

त्वदङ्घ्रिमुद्दिश्य कदापि केनचिद्
यथा तथा वाऽपि सकृत्कृतोञ्जलिः
तदैव मुष्णात्यशुभान्यशेषतः शुभानि
पुष्णाति न जातु हीयते ।। २८ ।।

उदीर्णसंसारदवाशुशुक्षणिं
क्षणेन निर्वाप्य परां च निर्वृतिम् ।
प्रयच्छति त्वच्चरणारुणाम्बुज-
द्वयानुरागामृतसिंधुशीकरः ।। २९ ।।

विलासविक्रांतपरावरालयं
नमस्यदार्तिक्षपणे कृतक्षणम् ।
धनं मदीयं तव पादपङ्कजं
कदा नु साक्षात्करवाणि चक्षुषा ।। ३० ।।

कदा पुनः शंखरथाङ्गकल्पक
ध्वजारविन्दाङ्कुशवज्रलाञ्छनम् ।
त्रिविक्रम! त्वच्चरणाम्बुजद्वयं
मदीयमूर्द्धानमलं करिष्यति ।। ३१ ।।

विराजमानोज्ज्वलपीतवाससं
स्मितातसीसूनसमामलच्छविम् ।
निमग्ननाभिं तनुमध्यमुन्नतंविशालवक्षः
स्थलशोभिलक्षणम् ।। ३२ ।।

चकासतं ज्याकिणकर्कशैः शुभै-
श्चतुर्भिराजानुविलंबिभिर्भुजैः ।
प्रियावतंसोत्पलकर्णभूषण-
श्लथालकाबंधविमर्दशंसिभिः ।। ३३ ।।

उदग्रपीनांसविलंबिकुंडला-
लकावलीबन्धुरकम्बुकन्धरम् ।
मुखश्रिया न्यक्कृतपूर्णनिर्मला-
मृतांशुबिंबाम्बुरुहोज्ज्वलश्रियम् ।। ३४ ।।

प्रबुद्धमुग्धाम्बुजचारुलोचनं
सविभ्रमभ्रूलतमुज्ज्वलाधरम् ।
शुचिस्मितं कोमलगण्डमुन्नसं
ललाटपर्यंतविलंबितालकम् ।। ३५ ।।

स्फुरत्किरीटांगदहारकंठिका
मणीन्द्रकाञ्चीगुणनूपुरादिभिः ।
रथांगशंखासिगदाधनुर्वरै-
र्लसत्तुलस्या वनमालयोज्ज्वलम् ।। ३६ ।।

चकर्थ यस्याभवनं भुजान्तरं
तव प्रियं धाम यदीयजन्मभूः ।
जगत्समस्तं यदपांगसंश्रयं
यदर्थमम्भोधिरमन्थ्यबन्धि च ।। ३७ ।।

स्ववैश्वरूप्येण सदानुभूतया
ऽप्यपूर्ववद्विस्मयमादधानया ।
गुणेन रूपेण विलासचेष्टितैः
सदा तवैवोचितया तव श्रिया ।। ३८ ।।

तया सहासीनमनन्तभोगिनि
प्रकृष्टविज्ञानबलैकधामनि ।
फणामणिव्रातमयूखमंडल-
प्रकाशमानोदरदिव्यधामनि ।। ३९ ।।

निवासशय्यासनपादुकांशुको
पधानवर्षातपवारणादिभिः ।
शरीरभेदैस्तव शेषतां गतै-
र्यथोचितं शेष इतीरिते जनैः ।। ४० ।।

दासः सखा वाहनमासनं ध्वजो यस्ते
वितानं व्यजनं त्रयीमयः ।
उपस्थितं तेन पुरो गरुत्मता
त्वदङ्घ्रिसम्मर्दकिणांकशोभिना ।। ४१ ।।

त्वदीयभुक्तोज्झितशेषभोजिना
त्वया निसृष्टात्मभरेण यद्यथा ।
प्रियेण सेनापतिना न्यवेदि
तत्तानुजानन्तमुदारवीक्षणैः ।। ४२ ।।

हताखिलक्लेशमलैः स्वभावतः
त्वदानुकूल्यैकरसैस्तवोचितैः ।
गृहीततत्तत्परिचारसाधनै-
र्निषेव्यमाणं सचिवैर्यथोचितम् ।। ४३ ।।

अपूर्वनानारसभावनिर्भर-
प्रबुद्धया मुग्धविदग्धलीलया ।
क्षणाणुवत्क्षिप्तपरादिकालया
प्रहर्षयन्तं महिषीं महाभुजम् ।। ४४ ।।

अचिंत्यदिव्याद्भुतनित्ययौवन-
स्वभावलावण्यमयामृतोदधिम् ।
श्रियः श्रियं भक्तजनैकजीवितं
समर्थमापत्सखमर्थिकल्पकम् ।। ४५ ।।

भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरं
प्रशांतनिःशेषमनोरथान्तरः ।
कदाहमैकांतिकनित्यकिंकरः
प्रहर्षयिष्यामि सनाथजीवितः ।। ४६ ।।

धिगशुचिमविनीतं निर्दयं मामलज्जं
परमपुरुष! योऽहं योगिवर्याग्रगण्यैः ।
विधिशिवसनकाद्यैर्ध्यातुमत्यन्तदूरं
तव परिजनभावं कामये कामवृत्तः ।। ४७ ।।

अपराधसहस्रभाजनं
पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे
कृपया केवलमात्मसात्कुरु ।। ४८ ।।

अविवेकघनान्धदिङ्मुखे
बहुधा सन्ततदुःखवर्षिणि ।
भगवन् भवदुर्दिने पथ
स्खलितंमामवलोकयाच्युत ।। ४९ ।।

न मृषा परमार्थमेव मे
शृणु विज्ञापनमेकमग्रतः ।
यदि मे न दयिष्यसे ततो
दयनीयस्तव नाथ दुर्लभः ।। ५० ।।

तदहं त्वदृते न नाथवान्
मदृतेत्वं दयनीयवान्न च ।
विधिनिर्मितमेतदन्वयं
भगवनपालय मा स्म जीहपः ।। ५१ ।।

वपुरादिषु योऽपि कोऽपि वा
गुणतोऽसानि यथातथाविधः ।
तदहं तव पादपद्मयाः
अहमद्यैव मया समर्पितः ।। ५२ ।।

मम नाथ यदस्ति योऽस्यहं
सकलं तद्धि तवैव माधव ।
नियतः स्वमिति प्रबुद्धधी
रथवा किंनु समर्पयामि ते ।। ५३ ।।

अवबोधितवानिमां यथा
मयि नित्यां भवदीयतां स्वयम् ।
कृपयैवमनन्यभोग्यतां
भगवन् भक्तिमयि प्रयच्छ मे ।। ५४ ।।

तव दास्यसुखैकसंगिनां
भवनेष्वस्त्वपि कीटजन्म मे ।
इतरावसथेषु मा स्मभू-
दपि मे जन्म चतुर्मुखात्मना ।। ५५ ।।

सकृत्त्वदाकारविलोकनाशया
तृणीकृतानुत्तमभुक्तिमुक्तिभिः ।
महात्मभिर्मामवलोक्यतां नय
क्षणेऽपि ते यद्विरहोऽतिदुःसहः ।। ५६ ।।

न देहं न प्राणान्न च सुखमशेषाभिलषितं
न चात्मानं नान्यत्किमपि तव शेषत्वविभवात् ।
बहिर्भूतं नाथ! क्षणमपि सहे यातु शतधा
विनाशं तत्सत्यं मधुमथन! विज्ञापनमिदम् ।। ५७ ।।

दुरन्तस्यानादेरपरिहरणीयस्य महतो
निहीनाचारोऽहं नृपशुरशुभस्यास्पदमपि ।
दयासिन्धो! बन्धो! निरवधिकवात्सल्यजलधे!
तव स्मारं स्मारं गुणगणमितीच्छामि गतभीः ।। ५८ ।।

अनिच्छन्नप्येवं यदि पुनरितीच्छन्निव रज
स्तमश्छन्नच्छद्मस्तुतिवचनभंगीमरचयम् ।
तथापीत्थं रूपं वचनमवलम्ब्यापि कृपया
त्वमेवैवंभूतं धरणिधर! मे शिक्षय मनः ।। ५९ ।।

पिता त्वं माता त्वं दयिततनयस्त्वं प्रियसुहृत्
त्वमेव, त्वं मित्रं गुरुरसि गतिश्चासि जगताम् ।
त्वदीयस्त्वद्भृत्यस्तव परिजनस्त्वद्गतिरहं
प्रपन्नश्चैवं सत्यहमपि तवैवास्मि हि भरः ।। ६० ।।

जनित्वाहं वंशे महति जगति ख्यातयशसां
शुचीनां युक्तानां गुणपुरुषतत्त्वस्थितिविदाम् ।
निसर्गादेव त्वच्चरणकमलैकान्तमनसा-
मधोऽधः पापात्मा शरणद! निमज्जामि तमसि ।। ६१ ।।

अमर्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूयाप्रसवभूः
कृतघ्नो दुर्मानी स्मरपरवशो वञ्चनपरः ।
नृशंसः पापिष्ठः कथमहमितो दुःखजलधेः
अपारादुत्तीर्णस्तव परिचरेयं चरणयोः ।। ६२ ।।

रघुवर!यदभूस्त्वं तादृशो वायसस्य
प्रणत इति दयालुर्यच्च चैद्यस्य कृष्ण! ।
प्रतिभवमपराद्धुर्मुग्धसायुज्यदोभूः
वद किमपदमार्गस्तस्य तेऽस्ति क्षमायाः ।। ६३ ।।

ननु प्रपन्नः सकृदेव नाथ!
तवाहमस्मीति च याचमानः ।
तवानुकम्प्यः स्मरतः प्रतिज्ञां
मदेकवर्जं किमिदं व्रतं ते ।। ६४ ।।

अकृत्रिमत्वच्चरणारविन्द-
प्रेमप्रकर्षावधिमात्मवन्तम् ।
पितामहं नाथमुनिं विलोक्य
प्रसीद मद्वृत्तमचिन्तयित्वा ।। ६५ ।।

यत्पदाम्भोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ।।

।। इति श्रीयामुनाचार्यविरचितम् स्तोत्ररत्नं सम्पूर्णम् ।।

मुकुन्दमाला

वन्दे ते मुकुन्दमरविन्ददलायताक्षं
कुन्देन्दुशङ्खदशनं शिशुगोपवेषम्।
इन्द्रादिदेवगणवन्दितपादपीठं
वृन्दावनालयमहं वसुदेवसूनुम्॥१॥

श्रीवल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्तप्रियेति भवलुण्ठनकोविदेति।
नाथेति नागशयनेति जगान्निवासे -
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरू मां मुकुन्द॥२॥

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीप:।
जयतु जयतु मेघश्यामल: कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्द:॥३॥

कुमुन्द मूर्ध्ना प्रणिपत्य याचे
भवन्तमेकान्तमियन्तमर्थम्।
अविस्मृतिस्त्वच्चरणारविन्दे
भवे भवे मेऽस्तु भवत्प्रसादत्॥४॥

नाहं वन्दे तव चरणयोर्द्वन्द्वमद्वन्द्वहेतो:
कुम्भीपाकं गुरूमपि हरे नारकं नापनेतुम्।
रम्या रामा मृदुतनुलता नन्दने नाभिरन्तुं
भावे भावे हृदयभवने भावयेयं भवन्तम्॥५॥

नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगो
यद्भाव्यं तद्भवतु भगवन्पूर्वकर्मानुरूपम्।

एतत्प्रार्थ्य मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादम्भोरूहयुगगत निशचला भक्तिरस्तु ॥६॥

दिवि वा भुवि वा ममस्तु वासो
नरके वा नरकान्तक प्रकामम् ।
अवधीरितशारदारविन्दौ
चरणौ ते मरणेऽपि चिन्तयामि ॥७॥

चिन्तयामि हरिमेव सन्ततं
मन्दहासमुदिताननाम्बुजम् ।
नन्दगोपतनयं परात्परं
नारदादिमुनिवृन्दवन्दितम् ॥८॥

करचरणसरोजे कान्तिमन्नेत्रमीने
श्रममुषि भुचवोचिव्याकुलेऽगाधमार्गे ।
ह रसरसि विगाह्यापीय तेजोजलैघं
एवमरूपरिखिन्नः क्लेशमद्य त्यजामि ॥९॥

सरसिजनयने सशङ्खचक्रे
मुरभिदि मा विरमस्व चित रन्तुम् ।
सुखतरमपरं न जातु जाने
हरिचरणस्मरणामृतेन तुल्यम् ॥१०॥

माभीर्मन्दमनो विचिन्त्य बहुधा यामीश्चिरं यातना
नामी नः प्रभवन्ति पापरिपव : स्वामी ननु श्रीधर : ।
आलस्यं व्यपनीय भक्तिसुलभं ध्यायस्व नारायणं
लोकस्य व्यसनापनोदनकरो दासस्य किं न क्षमः ॥११॥

भवजलधिगतानं द्वन्द्ववाताहतानं
सुतदुहितृकलत्त्राणभारादितानाम् ।

विषमविषयतोये मज्जतामप्लवानां
भवतु शरणमेको विष्णुपोतो नराणम् ॥१२॥

भवजलधिमगाधं दुस्तरं निस्तरेयं
कथमहमिति चेतो मा स्म गाः कातरत्वम् ।
सरसिजदृशि देवे तावकी भक्तिरेका
नरकभिदि निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम् ॥१३॥

तृष्णातो ये मदनपवनोद्धूतमोहोर्मिमाले
दारावर्ते तनयसहजग्राहसङ्घाकुले च ।
संसारा1ये महति जलधौ मज्ञतां नस्त्रिधाम -
न्पादाम्भोजे वरद भवतो भक्तिनावं प्रयच्छ ॥१४॥

वृथ्वी रेणुरणुः पयांसि कणिकाः फल्गुस्फुलिङ्गो लघु -
स्तेजो निःश्वसनं मरूत्तनुतरं रन्ध्र सुसूक्ष्मं नभः ।
क्षुद्रा रूद्रपितामहप्रभृतयः कीटाः समस्ता सुरा
दृष्टा यत्र स तावको विजयते भूमावधूतावधिः ॥१५॥

हे लोकाः श्रृणुत प्रसुतिमरणव्याधेश्चिकित्सामिमां
योगज्ञाः समुदाहरन्ति मुनयो यां याज्ञवल्क्यादयः ।
अन्तर्ज्येतिरमेयमेकममृतं कृष्णा1यमापीयतां
तत्पीतं परमौषधं वितनुते निर्वाणमात्यन्तिकम् ॥१६॥

हे मर्त्या : परमं हितं श्रृणुत वो वक्ष्यामि संक्षेपतः
संसारर्णवमापदूर्मिबहुलं सम्यक्प्रविश्य स्थिता : ।
नानाज्ञानमपास्य चेतसि नमो नारायणायेत्यमुं
मन्त्रं सप्रणवं प्रणामसहितं प्रावर्तयध्वं मुहु : ॥१७॥

नाथे नः पुरूषोत्तमे त्रिजगतामेकाधिपे चेतसा
सेव्ये स्वस्य पदस्य दादरि परे नारायणे तिष्ठति ।

यं कश्चित्पुरुषाधमं कतिपयग्रामेशमल्पार्थदं
सेवायै मृगयामहे नरमहो मूढा पराका पयम् ॥१८॥

बद्धेनाञ्जलिना नतेन शिरसा गात्रैः सरोमोद्गामैः
कण्ठेन स्वरगद्गदेन नयनेनोद्गीर्णवाष्पाम्बुना ।
नित्यं त्वच्चरणारविन्दयुगलध्यानामृतास्वादिना-
मस्माकं सरसीरूहक्ष सततं संपद्यता जीवितम् ॥१९॥

यत्कृष्णप्रणिपातधूलिधवलं तद्वर्ष्म तद्वै शिर-
स्ते नेत्रे तमसाज्झिते सुरुचिरे याभ्यां हरिर्दृश्यते ।
सा बुद्धिविमलेन्दुशङ्खधवला या माधवध्यायिनी
सा जिह्वामृतवर्षिणी प्रतिवदं या स्तौति नारायणम् ॥२०॥

जिह्व कीर्तय केशवं मुररिपुं चेतो भज श्रीधरं
पाणिद्वन्द्व समर्चयाच्युतकथाः श्रोत्रद्वय त्वं श्रुणु ।
कृष्णं लोकय लोचनद्वय हरेर्गच्छाङ्घ्रियुग्मालयं
जिघ्र घ्राण मुकुन्दपादतुलसीं मूर्धन्नमाधोक्षजम् ॥२१॥

आम्नायाभ्यसनान्यरण्यरूदितं कृच्छ्रव्रतान्यन्वहं
मेदच्छेदफलानि पूर्तविधयेः सर्व हुतं भस्मनि ।
तीर्थानासवगाहनानि च गजस्नानं विना यत्पद-
द्वन्द्वाम्भोरुहसंस्मृतिं विजयते देवः स नारायणः ॥२२॥

मदन परिहर स्थितिं मदीये मनसि मुकुन्दपदारविन्दधाम्नि ।
हरनयनकृशानुना कृशोऽसि स्मरसि न चक्रपराक्रमं मुरारेः ॥२३॥

नाथे धातरि भोगिभोगशयने नारायणे माधवे
देवे देवकिनन्दने सुरवरे चक्रायूधे शार्ङ्गिणि
लीलाशेषजगत्प्रपञ्चजठरे विश्वेश्वरे श्रीधरे
गोविन्द कुरू चितवत्तिमचलामन्यैस्तु किंवर्तनैः ॥२४॥

माद्राक्षं क्षीणपुण्यान्क्षणमपि भवतो भक्तिहीनान्बदाब्जे
माश्रौषं श्राव्यबद्धं तव
चरितमपास्यान्यदा1यानजातम् ।
मास्मार्ष माधव त्वामपि भुवनपते चेतसापह्नुवःना-
न्माभुवं त्वत्सुपर्यापरिकररहितो जन्मजन्मान्तरेऽपि ॥२५॥

मज्जन्मन : फलमिदं मधुकैटभारे
मत्प्रार्थनीयमदनुग्रह एष एव ।
त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्य-
भृत्यस्य भृत्य इति सां स्मर लोकनाथ ॥२६॥

तत्त्वं बुवाणनि परं परस्तान्मधु क्षरन्तीव मुदावहानि ।
प्रावर्तय प्राञ्जलिरस्मि जिह्वे नामानि नारायणगोचराणि ॥१७॥
नमामि नारायणपादपङ्कजं करोमि नारायणपूजनं सदा ।
पदामि नारायणनाम निर्मलं स्मरामि ारायणतत्वमव्ययम् ॥१८॥

श्रीनाथ नारायण वासुदेव गोविन्द दामोदर चक्रपाणे ।
श्रीपद्मनाभाच्युत कैटभारे श्रीराम पद्माक्ष हरे मुरारे ॥२९॥
अनन्त वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण जनार्दनानन्द निरामयेति ।
वक्तुं समर्थेऽपि वक्ति कश्चिदहो जनानं व्यसनाभिमु1यम् ॥३०॥

भक्तापायभुजङ्गगारूडमणिस्त्रैलोक्यरक्षामणि-
र्गोपीलोचनचातकाम्बुदमणिः सौन्दर्यमुद्रामणि : ।
यः कान्तमणिरूक्मिमणीघनकुचद्वन्द्वैकभूषामणि :
श्रेयो देव शिखामणिर्दिशतु नो गोपाल चूड़ामणिः ॥३१॥

शत्रुच्छेदैकमन्त्रं सफलमुपनिषद्वाक्यसंपूज्यमन्त्रं
संसारोत्तारमन्त्रं समुवचिततमःसङ्घनिर्याणमन्त्रम् ।
सर्वेश्वर्यैकमन्त्रं व्यसनभुजगसंदष्टसंत्राणमन्त्रं
जिह्वे श्रीकृष्णमन्त्रं जप जप सततं जन्मसाफल्यमन्त्रम् ॥३२॥

व्यामोहप्रशमौषधं मुनिमनोवृत्तिप्रवृत्त्यैषधं
दैत्येन्द्रार्तिकरौषधं त्रिजगतां संजीवनैकौषधम्।
भक्तात्यन्तहितौषधं भवभयप्रध्वंसनैकौषधं
श्रेयःप्राप्तिकरौषधं पिब मनः श्रीकृष्णदिव्यौषधम्॥३३॥

कृष्ण त्वदीयपदपङ्कजपञ्चरान्त
रद्यै व से विशतु मानसराजहंसः।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तै:
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥३४॥

चेतश्चिन्तय कीर्तवस्व रसने नम्रीभाव त्वं शिरो
हस्तावञ्जलिसंपुटं रचयतं बन्दस्व दीघं वपुः।
आत्मन् संश्रय पुण्डरीकनयनं नागाचलेन्द्रस्थितं
धन्यं पुण्यतमं तदेव परमं दैवं हि संसिद्धये ॥३५॥

श्रृण्वन् जनार्दनकथागुणकीर्तनानि
देहे न यस्य पुलकोद्‌गमरोमराचिः।
नोपद्यते नयनयोर्विमलाम्बुमाला
धिक्तस्य जीवितमहो पुरूषाधमस्य ॥३६॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य
चोरैः प्रभो बलिभिरिन्द्रियनामधेयैः।
मोहान्धकूपकुहरे विनिपातितस्य
देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥३७॥

इदं शरीरं श्लथसन्धिजर्जरं पतत्यवश्यं परिणामपेशलम्।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ दूर्मते निरामयं कृष्णरसायनं पिब ॥३८॥

आश्चर्यमेतद्धि मनुष्यलोके
सुधां परित्यज्य विषं पिबन्ति।

नामानि नारायणगोचरणि
त्यक्त्वान्यवाचः कुहकाः पठन्ति ।।३९।।

त्यजन्तु बान्धवाः सर्वे निन्दनतु गुरवो जनाः ।
तथापि परमानन्दो गोविन्दो मम जीवनम् ।।४०।।

सत्यं ब्रवीमि मनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहु -
र्यो यो मुकुन्द नरसिंह जरादेनेति ।
जीवो जपत्यनुदिनं मरणो रणो वा
पाषाणकाष्ठसदृशाय ददात्यभीष्टम् ।।४१।।

नारायणाया नम इत्यमुमेव मन्त्रं
संसारघोरविषनिर्हरणाय नित्यम् ।
श्रृणवन्तु भव्यमतयो यतयोऽनुरागा
दुचैस्तवरामुपदिशाम्यहमूर्ध्वबाहुः ।।४२।।

चितं नैव निवर्तते श्रणमपि श्रीकृष्णपादाम्बुज-
न्निन्दन्तु प्रियबान्धवा गुरूजना गृह् णन्तु, मुञ्चन्तु वा ।
दुर्वादं परिघोषयन्तु मनुज वंशे कलङ्कोऽस्तु वा
तादृक्प्रेमधरानुरागमधुना मत्तायमानं तु मे ।।४३।।

कृष्णो नक्षतु नो जगत्त्रयगुरूः कृष्णं नमध्वं सदा
कृष्णोनाखिलशत्रवो विनिहताः कृष्णाय तस्मै नमः ।
कृष्णादेव समुत्थितं जगदिदं कृष्णस्य दासोऽस्म्यहं
कृष्णे तिष्ठति विश्वमेतदखिलं हे कृष्ण रक्षस्व माम् ।।४४।।

हे गोपालक है कृपाजलनिधे हे सिन्धुकन्यापते
हे कंसान्तक हे गजेन्द्रकरूणपारीण हे माधव ।
हे रामानुज है जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष मां
हेगोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ।।४५।।

दारा वाराकरवरसुता ते तनूजो विरिञ्चिः
स्तोता वेदस्तव सुरगण भृत्यवर्गः प्रसादः ।
मुक्तिर्माया जगदविकलं तावकी देवकी ते
माता मित्रं बलरिपुसुतस्तत्त्वदन्यं न जाने ।।४६।।

प्रणाममीशस्य शिरःफलं विदु-
स्तदर्चनं पाणिफलं दिवौकस ः ।
मनःफलं तद्गुणतत्वचिन्तनं
वाचः फलं तद्गुणकोर्तनं बुधा ः ।।४७।।

श्रीमान्नाम प्रोच्य नारायणा1यं
केन प्राप्ता वाञ्छितं पापिनोऽपि ।
हा नः पूर्व वाक्प्रवृत्ता न तस्मिं-
स्तेन प्राप्तं गर्भवासादिदुःखस् ।।४८।।

ध्यायन्ति ये विष्णुमनन्तमच्युतं
हृत्पद्ममध्ये सततं व्यवस्थितं ।
माहितानां सतताभयप्रदं
ते यान्ति सिद्धिं परमां तु वैष्णवीम् ।।४९।।

स त्वं प्रसीद भगवन्कुरू मय्यनाथे
विष्णो कृपां परमकारूणिकः खलु त्वम् ।
संसारसागरनिमग्नमनन्त दीन-
मुद्धर्तुमर्हसि हरे पुरूषोत्तमोऽसि ।।५०।।

क्षीरसागरतरङ्गशीकरासारतारकितचारूमूर्तये ।
भोगिभोगशयनीयशयिने माधवाय मधुविद्धिषे नमः ।।५१।।

अलमलमेका प्राणिनां पातकानां
निरसनविषये या कृष्ण कृष्णेति वाणी ।

यदि भवति मुकुन्दे भक्तिरानन्दसान्द्रा
करतलकलिता सा मोक्षसाम्राज्यलक्ष्मीः ।।५२।।

यस्य प्रियौ श्रुतिधरौ कविलोकवीरौ
मित्रै द्विजन्मवरपार्श्वचरावभूताम्।
तेनाम्बुजाक्षचरणाम्बुजषट्पदेन
राज्ञा कृता कृतिरियं कुलशेखरेण ।।५३।।

मुकुन्दमालां पठतां नराणा -
मशेषसौ1यं लभते न कः स्वित्।
समस्तपापक्षयमेत्य देही
प्रयाति विष्णोः परमं पदं तत् ।।५४।।

इति श्री मुकुन्दमाला संपूर्णा ।।

मृत्युंजयस्तोत्रम्

मार्कण्डेय उवाच

नारायणं सहस्त्राक्षं पद्मनाभं पुरातनम्।
प्रणतोऽस्मि हृषीकेशं किं मे मृत्युः करिष्यति ।।१।।

गोविन्दं पुण्डरीकाक्षमनन्तमजमव्ययम्।
केशवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ।।२।।

वासुदेवं जगद्योनिं भानुवर्णमतीन्द्रियम्।
दामोदरं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ।। ३।।

शङ्खचक्रधरं देवं छन्नरूपिणमव्ययम्।
अधोक्षजं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ।।४।।

वाराहं वामनं विष्णुं नरसिहं जनार्दनम् ।
साधवं च प्रपन्नोऽसिम किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ ५ ॥

पुरूषं पुष्करं पुण्यं क्षेमबीजं जगत्पतिम् ।
लोकनाथं प्रपनन्नोऽस्मि किं मे मृत्यु ः करिष्यति ॥ ६ ॥

भूतात्मानं महात्मानं जगद्योनिमयोनिजम् ।
विश्वरूपं प्रपन्ननोऽस्मि कि मे मृत्युः क रिष्यति ॥ ७ ॥

सहस्त्रशिरसं देवं व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् ।
महायोगं प्रपन्ननोऽस्मि किं मे मृत्युः क रिष्यति ॥ ८ ॥

इत्युदीरितमाकर्ण्य स्तोत्रं तस्य महात्मनः ।
अपयातस्ततो मृत्युविष्णुदूतैश्च पीडितः ॥ ९ ॥

इति तेन जितो मृत्युर्मार्कण्डेयेन धीमता ।
प्रसन्ने पुण्डरीकाक्षे नृसिहे नास्ति दुर्लभम् ॥ १० ॥

मृत्युंजयमिदं पुण्यं मृत्युप्रशमनं शुभम् ।
मार्कण्डेयहितार्थय स्वयं विष्णुरूवाच ह ॥ ११ ॥

य इदं पठते भक्त्या त्रिकालं नियतः शुचिः ।
नाकाले तस्य मृत्युः स्याननन्नरस्याच्युतचेतसः ॥ १२ ॥

हृत्पद्ममध्ये पुरूषे पुरणं
नारायणं शाश्वतमादिदेवम् ।
संचिन्त्य सूर्यादवि राजमानं
मृत्युं स योगी जितवांस्तदैव ॥ १३ ॥

इति मृत्युंजयस्तोत्रम्

मंत्रपुष्पाञ्जलिः नं. १

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये ।
सहस्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे ।।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते ।
सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ।। १ ।।

नमो नमो वाङ्मनसातिभूमये ।
नमो नमो वाङ्मनसैकभूमये ।
नमो नमोऽनन्त महाविभूतये ।
नमो नमोऽनन्तदयैकसिन्धवे ।। २ ।।

न धर्मनिष्ठोस्मि न चात्मवेदी ।
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविंदे ।
अकिंचनोऽनन्यगतिः शरण्य
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ।। ३ ।।

हरिः ओम् हरिः ओम् । तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दीविव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्वयो जागृवांसः समिंधते विष्णोर्यत्परमं पदम् । ओम् पर्याप्त्यानंतराया यसर्वस्तोमोति रात्र उत्तमहर्भवति ।। सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य भूत्यै सर्वमेव तेनाप्नोति सर्वं जयति य एवं वेद

मंत्रपुष्पांजलिः (नं २)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान्कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषः आन्तादापराध्यात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासदः ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

मन्त्रपुष्पांजली नं. (३)

हरिः ॐ अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ।। १ ।।

हरि ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थो पायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणे । आप्यायध्व मग्घ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशँसो ध्रुवा अस्मिन् गौपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।। २ ।।

हरि ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये निहोता तत्सिवर्हिषि ।। ३ ।।

हरि ॐ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिश्रवन्तु नः ।। ४ ।।

ओंमित्यग्रे व्याहरेत् नम इति पश्चात् नारायणायेत्यु-
परिष्टात् ।। ५ ।।

ओमित्येकाक्षरं । नम इति द्वे अक्षरे । नारायणायेति पञ्चाक्षराणि । एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदं । यो हवै नारायण-स्याष्टाक्षरं पदमध्येति । अनपब्रुवः सर्वमायुरेति । विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गोपत्यं । ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽ मृतत्वमश्नुत इति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ।। ६ ।।

अथ कर्माण्याचाराद्यानि गृह्यंते । उदगयन पूर्वपक्षाहः । पुण्या हेषु कार्याणि । यज्ञोपवीतिना प्रदक्षिणम् ।। हरिः ॐ ।।

तिरु मन्त्रम्

ॐ नमो नारायणाय

द्वय मन्त्रम्

श्रीमन्नारायण चरणौ शरणं प्रपद्ये श्रीमते नारायणाय नमः ।

चरमश्लोकः

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

श्रीवैकुण्ठनाथः

सव्यं पादं प्रसार्याश्रितदुरितहरं दक्षिणं कुञ्चयित्वा
जानुन्याधाय सव्येतरमितरभुजं नागभोगे निधाय ।
पश्चाद्बाहुद्वयेन प्रतिभटशमने धारयन् शंखचक्रे
देवीभूपादिजुष्टो वितरतु जगतां शर्म वैकुण्ठनाथः ।। १ ।।

श्रीयामुनाचार्य विरचिता चतुश्लोकी

कान्तस्ते पुरुषोत्तमः फणिपतिः शय्यासनं वाहनं
वेदात्मा विहगेश्वरो यवनिका माया जगन्मोहिनी ।
ब्रह्मेशादिसुरव्रजः सदयितस्त्वद्दासदासीगणः
श्रीरित्येव च नाम ते भगवति ब्रूमः कथं त्वां वयम् ।। १ ।।

यस्यास्ते महिमानमात्मन इव त्वद्वल्लभोऽपि प्रभुः
नालं मातुमियत्तया निरवधिं नित्यानुकूलं स्वतः ।
तां त्वां दास इति प्रपन्न इति च स्तोष्याम्यहं निर्भयो
लोकैकेश्वरि लोकनाथदयिते दान्ते दयां ते विदन् ।। २ ।।

ईषत्त्वत्करुणानिरीक्षणसुधासन्धुक्षणाद्रक्ष्यते
नष्टं प्राक्तदलाभतस्त्रिभुवनं संप्रत्यनन्तोदयम् ।
श्रेयो न ह्यरविन्दलोचनमनःकान्ताप्रसादादृते,
संसृत्यक्षरवैष्णवाध्वसु नृणा सम्भाव्यते कर्हिचित् ।। ३ ।।

शान्तानन्तमहाविभूतिपरमं यद्ब्रह्मरूपं हरे
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि यत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम् ।
यान्यन्यानि यथासुखं विहरतो रूपाणि सर्वाणि
तान्याहुः स्वैरनुरूपरूप- विभवैर्गाढोपगूढानि ते ।। ४ ।।

आकारत्रयसंपन्नामरविन्दनिवासिनीम् ।
अशेषदजगदीशित्रीं वन्दे वरदवल्लभाम् ।।

रामानुजस्तोत्रम्

हे रामानुज हे यतिक्षितिपते हे भाष्यकार प्रभो
हे लीलानरविग्रहानघ विभो हे कान्तिमत्यात्मज ।
हे श्रीमन् प्रणतार्तिनाशन कृपामात्रप्रसन्नार्य प्रभो
हे वेदान्तयुगप्रवर्तक परं जानामि न त्वां विना ।। १ ।।

हे हारीतकुलारविंदतरणे हे पुण्यसंकीर्तन
ब्रह्मध्यानपर निदंडधर हे भूतिद्वयाधीश्वर ।
हे रंगेश नियोजक त्वरित हे गीश्शोकसंहारक स्वामिन्
हे वरदांबुदायक परं जानामि न त्वां विना ।। २ ।।

हे श्रीभूतपुरीश लक्ष्मणमुने, हे यादवा-
पादितापार्थार्थद्रुमकृन्तनोग्रपरशो हे भक्तमन्दारक ।
हे ब्रह्मासुरमोचनक्षम कृपाकूपार हे सज्ञनप्रेष्ठा-
मोघयन्तीन्द्रेदेशिकपरं जानामि न त्वां विना ।। ३ ।।

हे पूर्णाय कृपाप्तसद्वयमनो मालाधरानुग्रहात्
ज्ञातद्राविडवेदतत्त्व सुमते मन्नाथ पृथ्वीधर ।
कांचीपूर्णवरेण्यशिष्य भगवन् हे केशवस्यात्मज
श्रीपद्मेशपदाब्जषट्पदपरं जानामि न त्वां विना ।। ४ ।।

हे गोपीजनमुक्तिदानकर हे शास्त्रार्थतत्त्वज्ञ
हे गोष्ठीपूर्णकृपागृहीतविलसन्मन्त्राधिपाहस्कर ।

हेऽनंतेष्टफलप्रदायक गुरो हे विठ्ठलोशार्चित
हे बोधायन सूत्रसन्मत परं जानामि न त्वां विना ।। ५ ।।

।। इति श्रीरामानुजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

स्वस्ति वाचनम् (नं. १)

हरिः ओंऽ ।। च वाजिनम् । वाजिनमिति वाजिनम् । सोमगँ राजानम् । राजानम् वरुणं । वरुणमग्निम् । अग्निमन्वारभामहे । अन्वारभामह इत्यनु-आरभामहे । आदित्यान्यन् विष्णुम् । विष्णुगँ सूर्यम् । सूर्यं ब्रह्माणम् । ब्रह्माणं च । च बृहस्पतिम् । बृहस्पतिमिति बृहस्पतिम् । देवस्य त्वा । सवितुः । सवितुः प्रसवे । प्रसवेश्विनोः । प्रसव इति प्र सवे । अश्विनोर्बाहुभ्याम् बाहुभ्यां पूष्णः । बाहुभ्यामिति बाहु-भ्याम् । पूष्णोर्हस्ताभ्यां । हस्ताभ्यागँ सरस्वत्यै सरस्वत्यै वाचः । वाचो यन्तुः यन्तुर्यन्त्रेण । यन्त्रेणाग्नेः । अग्नेस्त्वा । त्वा साम्राज्येन । साम्राज्येनाभि । साम्राज्येनेति-साम्राज्येन अभि सिंचामिन्द्रस्य । इन्द्रस्य बृहस्पतेः । बृहस्पतेस्त्वा । त्वा साम्राज्येन साम्राज्येनाभि । साम्राज्येनेति साम् राज्येन । अभिषिंचामि । सिंचामीति सिंचामि ।। हरिः ओम् ।। ३ ।।

स्वस्ति वाचनम् (नं.-२)

हरिः ओम् । नवो नवो भवति । नवो नव इति नवः नवः । भवति जायमानः । जायमानोह्नाम् । अह्नाम् केतुः ।

केतुरुषसाम् । उषसामेति । एत्यग्रे । अग्र इत्यग्रे । भागं देवेभ्यः । देवेभ्यो वि । विदधाति । दधात्यायन्न् । आयन् प्र । आयन् इत्यायन्न् । प्र चंद्रमाः । चंद्रमास्तिरति । तिरति दीर्घम् । दीर्घमायुः । आयुरित्यायुः । शतमानं भवति । शतमानमिति शत-मानम् । भवति शतायुः । शतायुः पुरुषः । शतायुरिति शत-आयुः । पुरुषश्शतेंद्रियः । शतेन्द्रिय आयुषि । शतेंद्रिय इति शत-इन्द्रियः । आयुष्येव । एवेन्द्रिये । इन्द्रिये प्रति । प्रति तिष्ठति । तिष्ठितीति तिष्ठति । हरिः ओम् ३ ।।

विशेष गाथा

पूर्वाचार्यहॳ् पोदमनुट्टानङ्गळ् ।
कूर्वा वर्तैहळै कोण्डुनीर तेरि ।
इरुळ् दरुमा ञालत्ते, इन्ब मुत्तुवाळुम् ।
तेरुळ् तरुमा देशिकनैञ्चेन्र्दु ।। १ ।।

इन्द उपदेशरत्तिनमालै तनै ।
शिन्दै तन्निल् नाळुम् शिन्दिप्पार ।
ऐन्दै येदिराशर इन्नरुळुक्कु, येन्नुम् इलक्काहि ।
शदिराह वाऴि्न्दडुवताम् ।। २ ।।

मन्नुयिर्हाॳ् इङ्गे, मणवाळ मामुनिवन् ।
पोन्नडियाम् शेङ्क मलप्पोदु हळै ।

उन्निचिरत्ताले, तीण्डल्, अमानवनुम् नम्मै ।
करत्ताले तीण्डिल् कडन् ।। ३ ।।

पूमन्नु मादु, पोरुन्दिय मार्बन्,
पुहळ पामन्नु मारन् । अणिपणिन्दुयन्दवण् ।
पलकल योर तामन्न वन्दवि रामानुजन् चरणारविन्दम्
नामन्निवाऴ । नेंञ्जे शोल्लुवोम् अवन् नामंगळे ।। १ ।।

श्रीमण्ढरपुरालंकारभूत
श्री श्री श्रीरामाचार्य
(स्वामीजी महाराज की तनिया)

जगन्नाथार्यकृपया वेदांतद्वयपारगम् ।
वात्सल्यादिगुणावासं वन्दे रामानुजं गुरुम् ।। १ ।।

कुम्भे शतभिषातारे भरद्वाजान्वयोद्भवम् ।
जगदीशांघ्रिसद्भक्तं श्रीरामार्यमहं भजे ।। २ ।।

श्रीरामसूरिकरुणार्द्रकटाक्षलक्ष्यं
वेदान्तयुग्मविबुधं सुगुणाम्बुराशिम् ।
कामाद्यपेतमखिलात्मगुणैरुपेतं
लक्ष्मीप्रपन्नगुरुवर्यमहं प्रपद्ये ।। ३ ।।

श्रीकाश्यपान्वयपयोनिधिपूर्णचंद्रं
लक्ष्मीप्रपन्नगुरुवर्यकृपैकपात्रम् ।
क्षान्त्याद्यनन्तगुणपूरितहृत्सरोजं
श्रीरंगसूरिमनघं शरणं प्रपद्ये ।। ४ ।।

तुलार्के चोत्तराभाद्रपदर्क्षे काश्यपोद्भवम्
श्री प्रपन्नगुरोः शिष्यं श्रीरंगार्यमहं भजे ।। ५ ।।

श्री रामार्य भये आचार्य

श्री रामार्य भये आचार्य महा उपकारी ।
श्री पांडुरंग भूमीपर धर्मप्रचारी ।। टेर ।।

कहा कहूँ गुणों के धाम सत्व निरधारी ।
श्री पति के प्रिय महाराज दीन हितकारी । श्री रामार्य्य ।। १ ।।

सतकार करत श्री वैष्णव जनका सोहे ।
श्रीराम बाग देखत ही सबको मन मोहे । श्री रामार्य्य ।। २ ।।

श्री फलहारी स्वामी श्री श्रीरंगाचारी ।
वैष्णव सेवाको आप दिव्य तनु धारी । श्री रामार्य्य ।। ३ ।।

निज शिष्यनको उपदेश करत हितकारी ।
सब वैष्णव में प्रेम बढावत भारी । श्री रामार्य्य ।। ४ ।।

श्री रामानुज सिद्धान्त प्रवर्तक स्वामी ।
श्री शंख चक्र देवत वैदिक शिरनामी । श्री रामार्य्य ।। ५ ।।

अद्वैतज्ञ सभी से आप कहावत स्वामी ।
दासानुदास जस गात चरण के कामी । श्री रामार्य्य ।। ६ ।।

श्रीनृसिंह अवतार तनियन

वृषभे श्वातिनक्षत्रे, चतुर्दश्यां शुभे दिने ।
सन्ध्याकाले नृजेयुक्तं, स्तम्भोद्भूतोनृकेशरी ।। १ ।।

श्रीमन्नृसिंह विभवे गरुडध्वजाय,
तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय ।
तृष्णारिवृश्चिक जलाग्नि भृजङ्ग रोग,
क्लेशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ।। २ ।।

श्रीवामन अवतार तनियन

मासे भाद्रपदे शुक्ले, द्वादश्यां विष्णुदैवतम् ।
आदित्यात्तु समुद्भूतं, उपेन्द्रं वामनं भजे ।। १ ।।

श्रीराम अवतार तनियन

मेष मासे सिते पक्षे नवम्याञ्च पुनर्वसौ ।
मध्याह्ने कर्कटे लग्ने, जातो रामस्स्वयं हरिः ।। १ ।।

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ।।

श्रीकृष्ण अवतार तनियन

सिंहमासेऽसिते पक्षे,रोहिण्यां अष्टमी तिथौ ।
चरमार्थप्रदातारं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।। १ ।।

गोवर्धनो गिरिवरो यमुना नदी सा
वृन्दावनं च मथुरा च पुरी पुराणी ।
अद्यापि हन्त सुलभाः कृतिनां जनानां
एते भवच्चरणचारुजुषः प्रदेशाः ।। २ ।।

विभवावतार-अर्चावताराणाम्
अवतारबोधः

(श्रीनृसिंहजयन्ती, वृषभे, स्वात्याम्)

वृषभे स्वातिनक्षत्रे चतुर्दश्यां शुभे दिने ।
सन्ध्याकालेनृजे युक्ते स्तम्भोद्भूतो नृकेसरी ।।

श्रीमन्नृसिंहविभवे गरुडध्वजाय
तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय ।
तृष्णारिवृश्चिकजलाग्निभुजङ्गरोग-
क्लेशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ।।

(श्रीवामन भगवान)

मासे भाद्रपदे शुक्ले द्वादश्यां विष्णुदैवतं ।
आदित्यांशसमुद्भूतं उपेन्द्रं वामनं भजे ।।

(श्रीरामजयन्ती-मेषे, चैत्रशुक्लनवमी)

चैत्रमासे सिते पक्षे नवम्यां च पुनर्वसौ ।
मध्याह्ने कर्कटे लग्ने जातो रामः स्वयं हरिः ।।

(श्रीकृष्ण जयन्ती-सिंहे, रोहिण्याम्)

सिंहमासेऽसिते पक्षे रोहिण्यामष्टमीतिथौ ।
समुद्भूतं भजे कृष्णं चरमार्थपदं गुरुम् ।।

(श्रीनरनारायणाविर्भावः, कर्कटे, हस्तर्क्षे)

कर्कटे हस्तनक्षत्रे बदरीनिलयोद्भवम् ।
अष्टाक्षरप्रदातारं नारायणमहं भजे ।।

(श्रीवेङ्कटेशाविर्भावः - कन्यायां, श्रवणे)

कन्याश्रवणसञ्जातं श्रीशेषाचलवासिनम् ।
सर्वेषां प्रथमाचार्यं श्रीनिवासमहं भजे ।।

श्रीवेङ्कटाचलाधीशं श्रियाऽध्यासितवक्षसम् ।
श्रितचेतनमन्दारं श्रीनिवासमहं भजे ।।

(काञ्चीवरदराजाविर्भावः - मेषे, हस्तर्क्षे)

चैत्रमासे सिते पक्षे चतुर्दश्यां तिथौ मुनेः ।
शोभने हस्तनक्षत्रे रविवारसमन्विते ।।

वपाहोमे प्रवृत्ते तु प्रातःसवनकालिके ।
धातुरुत्तरवेद्यां तु प्रादुरासीज्जनार्दनः ।।

वपापरिमलोल्लासवासिताधरपल्लवम् ।
मुखं वरदराजस्य मुग्धस्मितमुपास्महे ।।

(मैलकोटा तिरुनारायणाविर्भावः मीने, हस्तर्क्षे)

सनत्कुमाररक्षार्थमागतं ब्रह्मणः पदात् ।
यदुशैलस्थितं मीने हस्ते नारायणं भजे ।।

(श्रीगोदाविर्भावः कर्कटे, पूर्वफल्गुन्याम्)

कर्कटे पूर्वफल्गुन्यां तुलसीकाननोद्भवाम् ।
पाण्ड्ये विश्वम्भरां गोदां वन्दे श्रीरङ्गनायकीम् ।।

नीलातुङ्गस्तनगिरितटीसुप्तमुद्बोध्य कृष्णं
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरःसिद्धमध्यापयन्ती ।
स्वोच्छिष्टायां स्रजि निगलितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः ।।

(सरोयोगिस्वाम्याविर्भावः - तुलायां, श्रवणे)

तुलायां श्रवणे जातं कांच्यां काञ्चनवारिजात् ।
द्वापरे पाञ्चजन्यांशं सरोयोगिनमाश्रये ।।

कांच्यां सरसि हेमाब्जे जातं कामारियोगिनम् ।
कलये यः श्रियः पत्युर्ज्ञानदीपमकल्पयत् ।।

(भूतयोगिस्वाम्याविर्भावः - तुलायां, धनिष्ठायां)

तुलाधनिष्ठासंभूतं भूतं कल्लोलमालिनः ।
तीरे फुल्लोत्पले मल्ल्यां पुर्यामीडे गदांशकम् ।।

मल्लीपुरवराधीशं माधवीकुसुमोद्भवम् ।
भूतं नमामि यो विष्णोः ज्ञानदीपमकल्पयत् ।।

(महदाह्वयस्वाम्याविर्भावः - तुलायां शतभिषजि)

दृष्ट्वा तुष्ट्वा सदा विष्णुं श्रीमयूरपुराधिपम् ।
कूपे रक्तोत्पले जातं महदाह्वयमाश्रये ।।

(श्रीभक्तिसारस्वाम्याविर्भावः - मकरे, मघायां)

मघायां मकरे मासे चक्रांश भार्गवोद्भवम् ।

महासारपुराधीशं भक्तिसारमहं भजे ।।

शक्तिपञ्चमयविग्रहात्मने
शुक्तिहारजितचित्तहारिणे ।
मुक्तिदायकमुरारिपादयो-
र्भक्तिसारमुनये नमो नमः ।।

(तिरुमञ्जन के समय)

त्वं मेऽहं मे कुतस्तत्तदपि कुत इदं वेदमूलप्रमाणात्
एतज्ञानादिसिद्धादनुभवविभवात् सोऽपि साक्रोश एव ।
क्वाक्रोशः कस्य गीतादिषु मम विदितः कोऽत्र साक्षी सुधीस्स्यात्,
हन्त त्वत्पक्षपाती इति नृकलहे मृग्य मध्यस्थवत् त्वम् ।।

एलाजातिलवङ्गचम्पकमिलत् कंकोलमुस्तानिशा
युग्मोशीरपटीर सालविलसत् काश्मीरकस्तूरिवत् ।
स्नानीयं तपनीयभाजनहतं तीर्थं कृतार्थं कुरु
स्नानेनाद्य वृषाद्रिनाथ जनतां त्रायस्व तापत्रयात् ।।
शोणायते वरद मौलिमणिप्रभाभिः
मन्दाकिनी भवति मङ्गलमंदहासैः ।
गात्रांशुभिर्विमिश्रितैः यमुनायते ते
तीर्थत्रयं प्रकटयेदभिषेकवारि ।।

अरुळपाड् शंखधार पद्मधार सहस्रधार भट्टर मंगळवाद्यम् ।।
(नोट) इसके बाद सहस्र धारा अभिषेक के समय पुरुषसूक्त, नारायणसूक्तादि पढें ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

(नीराट्टम् :- तिरुमंजन समय बोलने का प्रबन्ध)

गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान्,
नरपतिपरिक्लृप्तं शुल्कमादातुकामः ।
श्वशुरममरवन्द्यं रङ्गनाथस्य साक्षात्
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि ।। १ ।।

वेण्णैयळैन्द कुणुङ्गम्, विळयाडु पुळुदियुम् कोण्डु ।
तिण्णन विव्विरावुन्नै त्तेय्त्तुक्किडक्क नानोट्टेन् ।
एण्णेय् पुळिप्पळम् कोण्डु, इंगेत्तनै पोदुमिरुन्देन् ।
नण्णलरियपिराने, नारणा नीराड वाराय् ।। २ ।।

कन्नुघळोडच्चेवियिल्, कट्टेरुम्बु पिडित्तिट्टाल्
तेन्निक्केडुमाहिल् वेण्णै तिरट्टि, विलुंगुमा काण्बन् ।
निन्न मरामरम् शाय्त्ताय्, नीपिरन्द तिरुवोणम्
इन्नुनी नीराडवेण्डुम्, एम्बिरानोडादे वाराय् ।। ३ ।।

पेय्च्चि मुलैयुण्णक्कण्डु, पिन्नै युम्निल्लादे नेञ्जम्
आय्च्चियरेल्लारुम् कूडि, अळैक्कवुम् नान्मुलै तन्देन् ।
काय्च्चिन नीरोडु नेल्लि, कडारत्तिल् पूरित्तु वैत्तेन्
वाय्त्तपुहळ् मणिवण्णा, मञ्जनमाड नी वाराय् ।। ४ ।।

कञ्जन् पुणर्प्पिनिल् वन्द, कडियशकड मुदैत्तु
वञ्चकप्पेय् मगळ् तुञ्ज, वाय्मुळै वैत्त पिराने
मञ्जळुम् शेङ्गळुनीरिन्, वाशिकैयुम् नारु शान्दुम् ।
अञ्जनमुम् कोण्डुवैत्तेन्, अळगने नीराड वाराय् ।। ५ ।।

अप्पम् कलन्द शित्तुण्डि, अक्कारम् पालिल् कलन्दु
शोप्पडनान् शुट्टुवैत्तेन्, तिण्णलुरुदियेल् नम्बि ।
शेप्पिळमेन्मुलैयार्हळ्, शिरुपुरम् पेशिच्चिरिप्पर्
शोप्पड नीराड वेण्डुम्, शोत्तम्बिरानिंगे वाराय् ।। ६ ।।

एण्णै क्कुडत्तैयुरुट्टि, इळम्पिळ्ळै किळ्ळियेळुप्पि
कण्णैप्पुरट्टि विळित्तु, कळैकण्डु शेय्युम् पिराने ।
उण्णक्कनिहळ् तरुवन्, ओळलिकलोद नीर्पोले !
वण्णमळहिय नम्बि, मञ्जनमाड नी वाराय् ।। ७ ।।

करन्दनल् पालुम् तयिरुम्, कडैन्दुरिमेल् वैत्त
वेण्णै पिरन्ददुवै मुदलाह, पेत्तरियेनेम्बिराने ।
शिरन्द नल्तायलर् तूत्तुम्, येन्बदनाल् पिरर् मुन्ने
मरन्दु मुरैयाड माट्टेन्, मञ्जनमाड नी वाराय् ।। ८ ।।

कन्निनै वालोलैकट्टि, कनिहळुदिर् वेरिन्दु
पिन्तोडन्दोंडि ओर्पाम्बै, प्पिडित्तुक्कोण्डाट्टिनाय् पोलुम् ।
निन्तिरत्तेनल्लेन् नम्बी, नीपिरन्द तिरुनन्नाळ्
नन्नु नी नीराडवेण्डुम्, नारणा ओडादे वाराय् ।। ९ ।।

पूणित्तोळुविनिल् पुक्कु, पुळुदियळैन्द पोन्मेनि
काणप्पेरिदुम् उगप्पन्, आहिलुम् कण्डार् पळिप्पर् ।
नाणेत्तेनैयुमिलादाय् नप्पिन्नै काणिल् शिरिक्कुम्
माणिक्कमे, एन्मणिये, मञ्जनमाड नी वाराय् ।। १० ।।

कार्मलिमेनि निरत्तु, क्कण्णप्पिरानै युहन्दु
वार्मलि कोङ्गै यशोदै, मञ्जन माट्टिय वात्तै ।
पार्मलि तोल् पुदुवैक्कोन, पट्टर्पिरान् शोन्न पाडल्
शीर्मलि शेन्दमिळ् वल्लार् तीविनै यादुमिलरे ।। ११ ।।

द्वादश नामानि

ॐ केशवाय नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ वामनाय नमः
ॐ श्रीधराय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ दामोदराय नमः

गुरुपरम्परा पाठक्रमः

सर्वदेशदिशाकालेष्वव्याहतपराक्रमा ।
रामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्धतामभिवर्धताम् ।। १ ।।
रामानुजार्य दिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्ज्वला ।
दिगन्तव्यापिनी भूयात् सा हि लोकहितैषिणी ।। २ ।।
नमः श्रीशैलनाथाय कुन्तीनगरजन्मने ।
प्रसादलब्धपरमप्राप्य कैंकर्यशालिने ।।
श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवं
यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ।।

लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्देगुरुपरम्पराम् ।।

यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्म,
व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ।।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।

माता पितायुवतयस्तनयाविभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।
आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामं
श्रीमत्तदंघ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ।।

भूतं सरश्च महदाह्वय भट्टनाथ ।
श्री भक्तिसार कुलशेखर योगिवाहान् ।
भक्तांघ्रिरेणु परकाल यतीन्द्र मिश्रान् ।
श्रीमत् परांकुशमुनिं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ।।

गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान्
नरपतिपरिक्लृप्तं शुल्कमदातुकामः ।
श्वशुरममरवंद्यं रंगनाथस्य साक्षाद् ।
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि ।।

श्रीमते रम्यजामातृमुनीन्द्राय महात्मने ।
श्रीरंगवासिने भूयान्नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ।।
मंगलं यतिराजाय श्रीभाष्यार्थप्रदायिने ।
सौलभ्यपरिपूर्णाय महापूर्णाय मंगलम् ।।

मंगलं गुरुवर्याय मंगलं गुणसिन्धवे ।
वादिभीतिकरार्याय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ।।

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुंडरीक
व्यासाम्बरीषशुकशौनक भीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्मांगदार्जुन वसिष्ठविभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान्स्मरामि ।।

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन,
पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्तनेन ।
शुत्रर्विनश्यति धनंजयकीर्तनेन ।
माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः ।।

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पंचकंन्यास्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ।।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ।।

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपं ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ।।

कूजन्त रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानंदं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

श्रीरामानुजप्रपत्तिः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीकांतदिव्यपदपंकजसक्तचित्त
श्रीकारिसूनुचरणांबुजभृङ्गराज ।
श्रीवत्सचिह्नगुरुमानसराजहंस
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १ ।।

नाथार्ययामुनमुनीन्द्रकृपाकटाक्ष-
संलब्धबोधसकलश्रुतिमौलिवेद्य ।
पूर्णार्यवर्य्यकरुणार्पितमंत्ररत्न
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। २ ।।

श्रीरंगशेषगिरिवारणशैलनाथ-
पादारविंदपरमानुभवैकशील ।
वेदान्तयुग्मविशदीकरणैकधुर्य
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ३ ।।

दिल्लीशनीतमुपनीय तदीयकन्या-
सम्माननेन पुनरर्पित यादवाद्रौ ।
संपत्कुमारमभिषिक्तवतस्तवेमौ
रामानुचार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ४ ।।

तुंडीरभूमिपतिसत्कृतशंखचक्रे
शेषाचलाधिपतये किल ते वितीर्य्य ।
लोकैकनाथगुरुभावमुपेयुषस्ते
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ५ ।।

कांचीभवः कतिपये समये न दृष्टः
कालेन दृष्टिपथमेत्य पुनर्जनानाम् ।
मूको जगाद भवतः फणिराजभावं
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ६ ।।

बाह्यान्कुदृष्टिनिवहानपि सन्निरस्य
द्वैतं विशिष्टमखिलं श्रुतिमौलिवेद्यम् ।
निर्धार्य सात्त्विकजनाय निदर्शयन्तौ
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ७ ।।

श्रीभाष्यनामकमिदं भवदीयभाष्यं
श्रीभाष्यकार इति ते भुवने प्रथा स्यात् ।
इत्यादरेण किल शारदया स्तुतौ ते
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ८ ।।

भक्तिप्रपत्तिरपि वो यदि दुष्करे स्तो
रामानुजार्यचरणौ शरणं भजध्वम् ।
इत्याश्रितान्प्रति पुरा वरदोपदिष्टौ
रामानुजार्य! चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ९ ।।

वत्पादसेवनवशादधुना गुरूणां
मुक्तिः करे स्थितवती तु पुरा गुरूणाम् ।

मूर्धान्वयादिति वदंति विशुद्धभावा
रामानुजार्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १० ।।

आर्यैश्चतुष्कयुतसप्ततिपीठसंस्थैः
संसेवितो विमलसंयमिसप्तशत्या ।
अन्यैस्तदीयनिवहैरनुभाव्यमानौ
रामानुजार्यचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। ११ ।।

रामानुजार्य रमणीयगुणाभिराम
रागादिदुर्गमगुरो यतिसार्वभौम ।
सत्त्वप्रधान शरणागतवत्सलस्त्वं
रामानुजार्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।। १२ ।।

।। इति श्रीरामानुजप्रपत्तिः संपूर्णा ।।

श्री रामानुजसुप्रभातम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

वेदान्त देशिक कटाक्ष विवृद्ध बोधं,
कान्तोपयन्तृयमिनः करुणैकपात्रम् ।
वत्सान्ववायमनवद्यगुणैरुपेतं,
भक्त्या भजामि परवादिभयंकरार्यम् ।।
जय जय यतिसार्वभौमामलस्वान्त तुभ्यं नमः
जय जय जनिसिन्धुमग्नात्मसन्तारक ग्रामणीः ।
जयजय भजनीय कूरेशमुख्यैः प्रसीद प्रभो
जयजय विदुषां निधे जागृहि श्रीनिधे जागृहि ।। १ ।।

पूर्णार्यपूर्णकरुणापरिलब्धबोध!
वैराग्यभक्तिमुखदिव्यगुणामृताब्धे!
श्रीयामुनार्यपदपंकजराजहंस!
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। २ ।।

आनेतुमद्य वरदस्य गजाद्रिभर्तुः
पानीयमच्छमतिशीतमगाधकूपात् ।
ध्वान्तं निरस्तमरुणस्य करैस्समन्तात्
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। ३ ।।

श्रीरंगराजपदपंकजयोरशेष-
कैङ्कर्यमाकलयितुं सकुतूहलस्त्वम् ।
उत्तिष्ठ नित्यकृतिमप्यखिलां च कर्तुं
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। ४ ।।

श्रीभाष्यमालिखितुमात्तविशाललेख्यः
श्रीवत्सचिह्नगुरुरानतदिव्यगात्रः ।
वेदान्तसूत्रमपि वक्तुममुष्य सर्वम्
उत्तिष्ठ लक्ष्मणमुने! तव सुप्रभातम् ।। ५ ।।

गद्यत्रयं निगमशेखरदीपसारौ
वेदार्थसंग्रहमपि प्रथितं च नित्यम् ।
गीतार्थभाष्यमपि देशिकपुंगवानां
दातुं प्रसीद यतिशेखर! सुप्रभातम् ।। ६ ।।
आराधनं रचयितुं कमलासखस्य
श्रीयादवाचलपतेर्विविधोपचारैः ।

पातुं च दृष्टिकमलेन नतानशेषान्
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। ७ ।।

श्रीमान् स पूर्णवटुरादरतः प्रगृह्य
श्रीपादुकां यतिपते । पदयोः प्रयोक्तुम् ।
द्वारि स्थितिं वितनुते प्रणतार्तिहारिन्
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। ८ ।।

काषायवस्त्रकटिसूत्रकमण्डलूंश्च
श्रीदन्तकाष्ठमपि देशिकसार्वभौमाः ।
पाणौ निधाय निवसन्ति विशुद्धगात्राः
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। १० ।।

ब्राह्मे प्रबुद्ध्य विबुधाः स्वगुरून् प्रणम्य
रामानुजाय नम इत्यसकृद्ब्रुवाणाः ।
अष्टाक्षरं सचरमं द्वयमुच्चरन्ति
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। ११ ।।

संसेव्य! सप्तशतसंयमिसार्वभौमैः
सद्देशिकैस्सकलशास्त्रविदां वरिष्ठैः ।
एकान्तिभिः परमभागवतैर्निषेव्य!
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। १२ ।।
प्रातः पठन्ति परमद्रविडप्रपन्न-
गायत्रिमन्त्रशतमष्टशिरस्कमच्छम् ।
श्रीवैष्णावास्तवपदाब्जनिविष्टभावाः ।
रामानुजार्य! भगवन्! तव सुप्रभातम् ।। १३ ।।

त्वां वीक्षितुं समुपयाति वृषाचलेन्द्रः

त्वत्संप्रक्लृप्तवरशङ्खरथाङ्गपाणिः ।

संयोजितामुरसि मां भवतैव बिभ्रत्

रामानुजार्य ! भगवन् ! तव सुप्रभातम् ।। १४ ।।

श्रीमत्कुरंगपरिपूर्णविभुस्त्वदुक्तं

श्रीभाष्यशास्त्रममलं त्वयि भक्तियुक्तः ।

श्रोतुं समिच्छति यतीन्द्र ! सितोर्ध्वपुण्ड्रः

तं बोधयार्थमखिलं तव सुप्रभातम् ।। १५ ।।

त्वां बोधयन्ति गुरवः प्रथिता महान्तः

श्रीवैष्णवाश्च यमिनस्तव पादभक्ताः ।

एकान्तिनश्च विमलास्त्वदनन्यभावाः

तान् पालयाद्य यतिशेखर ! सुप्रभातम् ।। १६ ।।

पादाम्बुजं यतिपते ! शरणं विहर्तुं

संगत्य सतंरणवारिधिलङ्घनोत्काः ।

आयान्ति हस्तकमलाभिधृतोपचाराः

तान् पाहि ते करुणया तव सुप्रभातम् ।। १७ ।।

रामानुजार्य ! रमणीयगुणाभिराम !

रागादिदूरग ! गुरो ! गुरुसार्वभौम !

सत्त्वप्रधान ! शरणागतवत्सल ! त्व-

त्पादाब्जयोरिह परत्र च किंकरः स्याम् ।। १८ ।।

इत्यादरेण सततं शुभसुप्रभातं
ये मानवाः परिपठन्ति गुरुप्रभावम् ।
ते यान्ति विष्णुपदवीं निजजन्मनाशाद्
रामानुजार्यपदपंकजयोः प्रभावात् ।। १९ ।।

व्यासो वा भगवान्पराशर मुनिः श्रीशौनको वाथवा
साक्षान्नारदसंयमी शठरिपुः वागीश्वरो वाथवा ।
लोकेशः पुरुषोत्तमः फणिपतिः शेषो जगच्छेशिणः
इत्याख्यो जगतां हिताय समभूद्रामानुजार्यो मुनिः ।। २० ।।

।। इति श्री रामानुज सुप्रभातम् ।।

भगवद्भागवताचार्यवैभवम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

आचार्य्यं शठकोपदेशिकमतः प्राचार्यपारंपरे
श्रीमल्लक्ष्मणयोगिवर्यमुनावास्तव्यनाथादिकान् ।
वाल्मीकिं सह नारदेन मुनिना वाग्देवतावल्लभं
सीतालक्ष्मणवायुसूनुसहितं श्रीरामचन्द्रं भजे ।। १ ।।

श्रीरंगमंगलमहोत्सववर्द्धनाय
वेदान्तपांथपरमार्थसमर्थनाय ।
कैंकर्यलक्षणविलक्षणमोक्षलक्ष्म्यै
रामानुजो विजयते यतिराजराजः ।। २ ।।

श्रीरंगमंगलमणिं करुणानिवासं
श्रीवेंकटाद्रिशिखरालयकालमेघम् ।

श्रीहस्तिशैलशिखरोज्ज्वलपारिजातं
श्रीशं नमामि शिरसा यदुशैलदीपम् ।। ३ ।।

काषायशोभि कमनीयशिखानिवेशं
दण्डत्रयोज्ज्वलकरं विमलोपवीतम् ।
उद्यद्दिनेशनिभमुल्लसदूर्ध्वपुंड्रं
रूपं तवास्तु यतिराज दृशोर्ममाग्रे ।। ४ ।।

भक्तामृतं विश्वजनानुमोदनं
सर्वार्थदं श्रीशठकोपवाङ्मयम् ।
सहस्रशाखोपनिषत्समागमं
नमाम्यहं द्राविडवेदसागरम् ।। ५ ।।

नमामि रामानुजपादपंकजं
वदामि रामानुजनाम निर्मलम् ।
स्मरामि रामानुजदिव्यविग्रहं
करोमि रामानुजदासदास्यताम् ।। ६ ।।

श्रीमते रम्यजामातृमुनींद्राय महात्मने ।
श्रीरंगवासिने भूयान्नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ।। ७ ।।

मंगलं यतिराजाय श्रीभाष्यामृतदायिने ।
सौलभ्यपरिपूर्णाय महापूर्णाय मंगलम् ।। ८ ।।

मंगलं गुरुवर्याय मंगलं गुणसिन्धवे ।
वादिभीतिकरार्याय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ।। ९ ।।

।। इति श्रीमद्भागवताचार्यवैभवं संपूर्णम् ।।

भवमङ्गलाष्टकम्

श्रीरंगं कररिशैलमञ्जनगिरौ शेषाद्रिसिंहाचलं
श्रीकूर्मं पुरुषोत्तमं च बदरीनारायणं नैमिषम् ।
श्रीमद्द्वारवतीप्रयागमथुरायोध्यागयापुष्करं शाल-
ग्रामनिवासिनो विजयते रामानुजोऽयं मुनिः ।। १ ।।

सर्वेषां कृतिनां चरन्ति गुरवः कैंकर्यनिष्ठाहरेः
श्रीरामानुजयोगिनायकमणिश्रीपादपद्मालयाः ।
भोग्याष्टाक्षरमंत्ररत्नचरमश्लोकानुसन्धायिनो
वंद्या भागवतोत्तमाः प्रतिदिनं कुर्वंतु मे मंगलम् ।। २ ।।

स श्रीमान्परमः पुमानथ चतुर्व्यूहावतारस्ततो
जाता व्यूहपरंपराः सुरचिताः श्रीकेशवाद्याः पराः ।
एकाम्भोनिधिशेषभोगशयनन्यग्रोधपत्राश्रय-
क्षीरोदन्वदनन्ततल्पसुखदाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ।। ३ ।।

श्रीरामानुजयोगिपूर्णयमुनावास्तव्यमालाधरा-
नाथः कारितनूजसैन्यपरमः श्रीमांश्च नारायणः ।
चण्डाद्याः कुमुदादयः परिजना नित्याश्च मुक्ताश्च ये
श्रीवैकुण्ठनिवासिनोऽमरवराः कुर्वन्तु मे मंगलम् ।। ४ ।।

मत्स्यः कूर्मवराहमानवहरि श्रीवामनो भार्गवः
श्रीरामो बलदेवदेवकिसुतौ कल्की दशैते क्रमात् ।
अन्तर्याम्यथ योगिनां हृदयगोप्यर्च्चावताराः शुभाः
श्रीरंगादिसमस्तधामनिलयाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ।। ५ ।।
श्रीभूमिर्विमलादयो नयसुधापद्माधृताः शक्तयो

वेदा वेदवती धरापि च महालक्ष्मीः सुकेशालया ।
देवी भार्गवभामिनी जनकजा सा रेवती रुक्मिणी
वेदाद्या प्रभयान्विता दशरमाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ।। ६ ।।

शुत्रध्वंसिसुदर्शनं सुखकरं श्रीपाञ्चजन्यः सदा
बाणाः शार्ङ्गममर्षहर्षजनकं कौमोदकी नन्दकः ।
सत्पद्मं मुसलं हलं च परशुर्दिव्यायुधानि प्रभो
सेनाधीशखगेशभोगिपतयः कुर्वन्तु मे मंगलम् ।। ७ ।।

हंसो धर्मनिदर्शनो हरिर्मुखो यज्ञश्च धन्वन्तरिः
पथोऽजो मिथुनोदितो हरिरलंकारः पृथिव्या पृथुः ।
आद्यो वेदमुखश्च जन्मनिलयो नारायणो वै
विराट् श्वेतद्वीपनिवासिजीवहृदयः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।। ८ ।।

विष्वक्सेनमुनिर्ह्यनन्तमुनयः श्रीसंप्रदायादिमा
येऽन्ये भूतभविष्यदृश्यसमये श्रीरंगभूभूषणाः ।
ये वै भागवताः सुखा दशगणा भृत्या नरा वानराः
श्वेतद्वीपनिवासिनो नववराः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।। ९ ।।

इत्युक्तं भवमंगलाष्टकमिदं सुश्लोकसंकीर्तनं
श्रीमद्भागवतप्रसादजनकं श्रीवेङ्कटेशेन यत् ।
भक्ता ये प्रपठन्ति शुद्धमनसः प्रोत्फुल्लहृत्पंकजास्तेषां-
वाञ्छितमंगलं प्रकुरुते भक्तिप्रियो माधवः ।।

जगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिन्दीतट-विपिन-सङ्गीतकरवो
मुदाभीरीनारी-वदनकमलास्वाद-मधुपः ।
रमा-शम्भु-ब्रह्मामरपति-गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। १ ।।

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि-कटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्वृन्दावन-वसति-लीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। २ ।।

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज-बलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रामध्यस्थः सकल-सुर-सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ३ ।।

कृपा-पारावारः सजल-जलद-श्रेणि-रुचिरो
रमावाणीरामः स्फुरदमलपंकेरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा-गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ४ ।।

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित-भूदेव-पटलैः
स्तुति-प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।

दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ५ ।।

परब्रह्मापीडः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि ।
रसानन्दो राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ६ ।।

न वै याचे राज्यं न च कनक-माणिक्य-विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल-जन-काम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ७ ।।

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते !
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते !
अहो दीनेऽनाथे निहित-चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। ८ ।।

जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचि ।
सर्वपाप-विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ।। १ ।।

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ।। २ ।।

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये ।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ।। ३ ।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ।। ४ ।।

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्य-
सम्पूजितो राघवः पातु माम् ।। ५ ।।

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ।। ६ ।।

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।

वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ।। ७ ।।

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं
किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ।। ८ ।।

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सर्वतः ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भर-
स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ।। ९ ।।

।। इति अच्युताष्टकं सम्पूर्णम् ।।

नारायणाष्टकम्

वात्सल्यादभयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्वापणा-
दौदार्यादघशोषणादगणितश्रेयः पदप्रापणात् ।
सेव्यः श्रीपतिरेक एव जगतामेतेऽभवन्साक्षिणः
प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट् पाञ्चाल्यहल्या ध्रुवः ।। १ ।।

प्रह्लादास्ति यदीश्वरो वद हरिः सर्वत्र मे दर्शय
स्तम्भे चैवमिति ब्रुवन्तमसुरं तत्राविरासीद्धरिः ।
वक्षस्तस्य विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमापादय-
न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। २ ।।

श्रीरामात्र विभीषणोऽयमनघो रक्षोभयादागतः
सुग्रीवानय पालयैनमधुना पौलस्त्यमेवागतम् ।
इत्युक्त्वाभयमस्य सर्वविदितं यो राघवो दत्तवा-
न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। ३ ।।

चक्रग्रस्तपदं समुद्धतकरं ब्रह्मादयो भो सुराः
पाल्यन्तामिति दीनवाक्यकरिणं देवेष्वशक्तेषु यः ।
मा भैषीरिति यस्य नक्रहनने चक्रायुधः श्रीधरः
आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। ४ ।।

भो कृष्णाच्युत भो कृपालय हरे भो पाण्डवानां सखे
क्वासि क्वासि सुयोधनादपहृतां भो रक्ष मामातुराम् ।
इत्युक्तोऽक्षयवस्त्रसंभृततनुं योऽपालयद्द्रौपदीम्
आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। ५ ।।

यत्पादाब्जनखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं
यन्नामामृतपूरकं च पिबतां संसारसन्तारकम् ।
पाषाणोऽपि यदङ्घ्रिपद्मरजसा शापान्मुनेर्मोचितो
आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। ६ ।।

पित्रा भ्रातरमुत्तमासनगतं चौत्तानपादिर्ध्रुवो
दृष्ट्वा तत्सममारुरुक्षुरधृतो मात्रावमानं गतः ।
यं गत्वा शरणं यदाप तपसा हेमाद्रिसिंहासनम्

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ।। ७ ।।

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीता
घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं
विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ।। ८ ।।

।। इति श्रीनारायणाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ श्रीरामाय नमः
ॐ रामभद्राय नमः
ॐ रामचंद्राय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ राजीवलोचनाय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ राजेन्द्राय नमः
ॐ रघुपुङ्गवाय नमः
ॐ जानकीवल्लभाय नमः
ॐ जैत्राय नमः (१०)
ॐ जितामित्राय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः
ॐ दान्ताय नमः
ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः
ॐ बालिप्रमथनाय नमः
ॐ वाग्मिने नमः
ॐ सत्यवाचे नमः
ॐ सत्यविक्रमाय नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः (२०)
ॐ व्रतधराय नमः
ॐ सदाहनुमदाश्रिताय नमः
ॐ कौसलेयाय नमः
ॐ खरध्वंसिने नमः

ॐ विराधवधपंडिताय नमः
ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः
ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः
ॐ सप्ततालप्रभेत्रे नमः
ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः
ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः (३०)
ॐ ताटकान्तकाय नमः
ॐ वेदान्तसाराय नमः
ॐ वेदात्मने नमः
ॐ भवरोगभेषजाय नमः
ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः
ॐ त्रिमूर्तये नमः
ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ त्रिलोकात्मने नमः
ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः (४०)
ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ दंडकारण्यकर्तनाय नमः
ॐ अहल्याशापशमनाय नमः
ॐ पितृभक्ताय नमः
ॐ वरप्रदाय नमः
ॐ जितेन्द्रियाय नमः
ॐ जितक्रोधाय नमः
ॐ जितामित्राय नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः (५०)
ॐ ऋक्षवानरसंघातिने नमः
ॐ चित्रकूटसमाश्रयाय नमः
ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः
ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः
ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः
ॐ मृतवानरजीवनाय नमः
ॐ मायामारीचहन्त्रे नमः
ॐ महादेवाय नमः
ॐ महाभुजाय नमः
ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः (६०)
ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः
ॐ सौम्याय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
ॐ महायोगिने नमः
ॐ महोदराय नमः

ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यप्रदाय नमः
ॐ स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः
ॐ आदिपुरुषाय नमः
ॐ परमपुरुषाय नमः (७०)
ॐ महापुरुषाय नमः
ॐ पुण्योदयाय नमः
ॐ दयासागराय नमः
ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
ॐ स्मितवक्त्राय नमः
ॐ मितभाषिणे नमः
ॐ पूर्वभाषिणे नमः
ॐ राघवाय नमः
ॐ अनन्तगुणगंभीराय नमः
ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमायनमः (८०)
ॐ मायामानुषचारित्राय नमः
ॐ महादेवादिपूजिताय नमः
ॐ सेतुकृते नमः
ॐ जितवाराशये नमः
ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ श्यामाङ्गाय नमः
ॐ सुंदराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ पीतवाससे नमः (९०)
ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः
ॐ यज्वने नमः
ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
ॐ विभीषणप्रतिष्ठात्रे नमः
ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ परस्मैब्रह्मणे नमः
ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
ॐ परस्मैज्योतिषे नमः (१००)
ॐ परस्मैधाम्ने नमः
ॐ पराकाशाय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ परेशाय नमः
ॐ पारगाय नमः
ॐ पाराय नमः
ॐ सर्ववेदात्मकाय नमः
ॐ परस्मै नमः (१०८)

।। इति श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः समाप्ता ।।

श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ श्रीकृष्णाय नमः

ॐ कमलानाथाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ सनातनाय नमः
ॐ वसुदेवात्मजाय नमः
ॐ पुण्याय नमः
ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः
ॐ श्री वत्सकौस्तुभधराय नमः
ॐ यशोदावत्सलाय नमः
ॐ हरये नमः (१०)
ॐ चतुर्भुजात्तचक्राब्जगदा-
खड्गाद्युदायुधाय नमः
ॐ देवकीनंदनाय नमः
ॐ श्रीशाय नमः
ॐ नंदगोपप्रियात्मजाय नमः
ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः
ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
ॐ शकटासुरभंजनाय नमः
ॐ नंदव्रजजनानन्दिने नमः
ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
ॐ नवनीतविलिप्तांगाय नमः
ॐ नवनीतनटाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ नवनीतनवाहराय नमः
ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
ॐ षोडशस्त्रीसहस्त्रेशाय नमः
ॐ त्रिभंगीललिताकृतये नमः
ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ योगिनां पतये नमः
ॐ वत्सवाटचराय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ धेनुकासुरखंडनाय नमः
ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः
ॐ यमलार्जुनभंजनाय नमः
ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः
ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः
ॐ गोपगोपीश्वराय नमः
ॐ योगिने नमः
ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः (४०)
ॐ इलापतये नमः
ॐ परंज्योतिषे नमः
ॐ यादवेन्द्राय नमः
ॐ यदूद्वहाय नमः
ॐ वनमालिने नमः

ॐ पीतवाससे नमः
ॐ पारिजातापहारकाय नमः
ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
ॐ गोपालाय नमः
ॐ सर्वपालकाय नमः (५०)
ॐ अजाय नमः
ॐ निरंजनाय नमः
ॐ कामजनकाय नमः
ॐ कंजलोचनाय नमः
ॐ मधुघ्नय नमः
ॐ मथुरानाथाय नमः
ॐ द्वारकानायकाय नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ वृन्दावनान्तसंचारिणे नमः
ॐ तुलसीदामविभूषणाय नमः (६०)
ॐ स्यमन्तकमणिहर्त्रे नमः
ॐ नरनारायणात्मकाय नमः
ॐ कुब्जाकृष्टाम्बरधराय नमः
ॐ मायिने नमः
ॐ परमपुरुषाय नमः
ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-
विशारदाय नमः

ॐ संसारवैरिणे नमः
ॐ कंसारये नमः
ॐ मुरारये नमः
ॐ नरकांतकाय नमः (७०)
ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः
ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
ॐ शिशुपालशिरःछेत्रे नमः
ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः
ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
ॐ सत्यवाचे नमः
ॐ सत्यसंकल्पाय नमः
ॐ सत्यभामारताय नमः
ॐ जयिने नमः (८०)
ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः
ॐ जिष्णवे नमः
ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः
ॐ जगन्नाथाय नमः
ॐ वेणुनादविशारदाय नमः
ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः
ॐ बाणासुरान्तकाय नमः

ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः (९०)
ॐ पार्थसारथये नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः
ॐ गीतामृतमहोदधये नमः
ॐ कालीयफणमाणिक्य-
रंजितपदाम्बुजाय नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः
ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ परब्रह्मणे नमः (१००)
ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः
ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी-
वस्त्रापहारकाय नमः
ॐ पुण्यश्लोकाय नमः
ॐ तीर्थपदाय नमः
ॐ वेदवेद्याय नमः
ॐ दयानिधये नमः
ॐ श्रीरुक्मिणीसत्यभामा-
समेतश्रीगोपालस्वामिने नमः (१०८)

श्रीसुदर्शनाष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ श्रीसुदर्शनाय नमः
ॐ चक्रराजाय नमः
ॐ तेजोव्यूहाय नमः
ॐ महाद्युतये नमः
ॐ सहस्रबाहवे नमः
ॐ दीप्ताङ्गाय नमः
ॐ अरुणाक्षाय नमः
ॐ प्रतापवते नमः
ॐ अनेकादित्यसंकाशाय नमः
ॐ प्रोर्ध्वज्वालाभिरञ्जिताय नमः (१०)
ॐ सौदामिनीसहस्राभाय नमः
ॐ चतुर्वेदमयाय नमः
ॐ अनलाय नमः
ॐ भक्तचांद्रमसज्योतिषे नमः
ॐ भवरोगविनाशकाय नमः
ॐ रेफात्मकाय नमः
ॐ मकारात्मने नमः
ॐ रक्षोसृग्रूपिषाङ्गकाय नमः
ॐ सर्वदैत्यग्रीवनालवि-
भेदनमहागजाय नमः
ॐ भीमदंष्ट्राय नमः

ॐ ज्वालाकाराय नमः (३०)
ॐ भीमकर्मणे नमः
ॐ त्रिलोचनाय नमः
ॐ नीलवर्त्मने नमः
ॐ नित्यसुखाय नमः
ॐ निर्मलश्रियै नमः
ॐ निरञ्जनाय नमः
ॐ रक्तमाल्यांबरधराय नमः
ॐ रक्तचन्दनरूषिताय नमः
ॐ रजोगुणाकृतये नमः
ॐ शूराय नमः (४०)
ॐ रक्षःकुलयमोपमाय नमः
ॐ नित्यक्षेमंकराय नमः
ॐ प्राज्ञाय नमः
ॐ पाषण्डजनखण्डनाय नमः
ॐ नारायणाज्ञानुवर्तिने नमः
ॐ नैगमान्तप्रकाशकाय नमः
ॐ बलिनन्दनदोर्दण्डखंडनाय नमः
ॐ विजयाकृतये नमः
ॐ मित्रभाविने नमः
ॐ सर्वमयाय नमः (५०)
ॐ तमोविध्वंसनाय नमः
ॐ रजस्सत्वतमोद्वर्तिने नमः
ॐ त्रिगुणात्मने नमः
ॐ त्रिलोकधृते नमः
ॐ हरिमायागुणोपेताय नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ अक्षस्वरूपभाजे नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ परंज्योतिषे नमः
ॐ पञ्चकृत्यपरायणाय नमः (६०)
ॐ ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्य-
तेजः प्रभामयाय नमः
ॐ सदसत्परमाय नमः
ॐ पूर्णाय नमः
ॐ वाङ्मयाय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ जीवाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ हंसरूपाय नमः
ॐ पञ्चाशत्पीठरूपकाय नमः (७०)
ॐ मातृकामण्डलाध्यक्षाय नमः
ॐ मधुध्वंसिने नमः

ॐ मनोमयाय नमः
ॐ बुद्धिरूपाय नमः
ॐ चित्तसाक्षिणे नमः
ॐ साराय नमः
ॐ हंसाक्षरद्वयाय नमः
ॐ मंत्रयंत्रप्रभावज्ञाय नमः
ॐ मन्त्रयन्त्रमयाय नमः
ॐ विभवे नमः (८०)
ॐ स्रष्ट्रे नमः
ॐ क्रियास्पदाय नमः
ॐ शुद्धाय नमः
ॐ मन्त्रबोद्ध्रे नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ निरायुधाय नमः
ॐ असंरंभाय नमः
ॐ सर्वायुधसमन्विताय नमः
ॐ ओंकाररूपाय नमः
ॐ पूर्णात्मने नमः (९०)
ॐ कारात्साध्यबन्धनाय नमः
ॐ ऐङ्काराय नमः
ॐ वाक्यप्रदाय नमः
ॐ वाग्मिने नमः
ॐ श्रींकारैश्वर्यवर्धनाय नमः
ॐ क्लींकारमोहनाकाराय नमः
ॐ हुँफडक्षोभणाकृतये नमः
ॐ इन्द्रार्चितमनोवेगाय नमः
ॐ धरणीभारनाशकाय नमः
ॐ वीराराध्याय नमः (१००)
ॐ विश्वरूपाय नमः
ॐ वैष्णवाय नमः
ॐ विष्णुरूपकाय नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः
ॐ सत्पराय नमः
ॐ सत्यधर्मानुषङ्गकाय नमः
ॐ नारायणकृपाव्यूहतेजश्चक्राय नमः
ॐ श्रीसुदर्शनाय नमः

।। इति श्रीसुदर्शनाष्टोत्तरशतनामावलिः संपूर्णा ।।

श्री जानकी जी के जगाने का भजन

सखियाँ जगावन आंई, जागोमाता जानकी ।। टेर ।।
अवधपुरी की सखियाँ सारी
अपने-अपने धाम की ।
सहस्त्र सखी चँवर ढुलावे सहज
सीताराम की ।। सखियाँ जगावन ।। १ ।
सर्वदेव करते सेव चौकी हनुमान
की, जानकी के महलमांई
कोटि शोभा धाम की ।।
सखियाँ जगावन् ।। २ ।।
चित्रकोटि सुख-विलास जहाँ है शोभा धाम की ।
तुलसीदास शरण आयो विनती गुलाम की ।
सखियाँ जगावन आंई जागो माता जानकी ।। ३ ।।

श्रीभगवान को जगाने का भजन

प्रात समय उठि जनकनंदिनी त्रिभुवन नाथ जगावे ।।
उठो नाथ मम नाथ प्रानपति भूपति भवन बुलावे ।। टेर ।।
हस्त कमल दै चरन पलोटै लै लैद्दगन लगावे ।
सोई पद परसि नारि गौतम की तुरत परमपद पावै ।। प्रात ।। १ ।।
उरझी माल गले मोतियन की कर अंगुरिन सुरझावें ।
घूंघुर वाले अलक वदन पर पाग की पेंच सँवारें ।। प्रात ।। २ ।।

कनक-कलश सरयूजल झारी विप्रनदान करावे ।
कमलनयन मुख निरखि राम को आनंद उरन समावे ।। प्रात ।। ३ ।।
संत जनन की यही विनती आरत वचन सुनावे ।
माधवदास सिया रघुवर के हरखि निरख गुन गावे ।। प्रात ।। ४ ।।

बाजे रुनक झुनक (भजन)

बाजे रुनक झुनक, । पग नेवर बाजे,
म्हारो गजानन्द नाचे, ओ नाचे म्हारो, गजानन्द नाचे ।
पिता तुम्हारे है शिवशंकर, नंदीश्वर साजे,
मात तुम्हारी है श्रीगीरजा, सिंह चढी गाजे ।। १
बाजे रुनक झुनक......
एक दंत महाराज गले मे, पुष्प हार राजे,
श्री गणपती का रूप देखके कोटी काम लाजे ।। २ ।।

बाजे रुनक झुनक......
विघ्न निवारण मंगल कारण, रटताँ दुःख भाजे,
सब से पहले पुजा थारी, राजन पती राजे ।। ३ ।।

बाजे रुनक झुनक......
भीतर आप विराजो देवा, रिद्धी सिद्धी सागे,
तुलसीदास गणपतीने सुमरिया, दुःख दारिद्र भागे ।। ४ ।।

बाजे रुनक झुनक पग नेवर बाजे, पग नेवर बाजे,
म्हारो गजानंद नाचे......
नाचे म्हारो गजानंद नाचे ।

-अरविंद सोमाणी

सीताराम (भजन)

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में,
तु अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथे में ।

विधि का विधान जानि, हानि लाभ सहिये
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा
होगा प्यारे वही जो 'श्री' राम जी को भाएका ।

फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये,
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।

जिन्दगी की डोर सौप हाथ दीनानाथ के,
महलो में राखे चाहे झोपडी में बास दे ।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिए,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये ।

आशा एक रामजी सेदूजी आशा छोड दे,
नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड दे
साधु संग राम रंग अंग अंग रहिये,
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम, सीताराम कहिए,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये ।
मिलता है सच्चा सुख केवल,

भगवान तुम्हारे चरणों में

सियाराम तुम्हारे चरणों में,
यह विनती है, पल पल छिन छिन,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में,
सियाराम तुम्हारे चरणों में ।। टैर ।।

चाहे बैरी कुल संसार बने चाहे जीवन मुझ-
पर भार बने, जाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में,
सियाराम तुम्हारे चरणों में ।। १ ।।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों
ओर अंधेरा हो, पर मन ना डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे,
सियाराम तुम्हारे चरणों में ।। २ ।।

चाहे अग्नी में मुझे जलना हो,
चाहे काँटो पर मुझे चलना हो,
चाहे छोड के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ।। ३ ।।

जीह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और श्याम रहे,
तेरी याद मे आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणोमें ।। ४ ।।

-अरविंद सोमाणी

मेरे वैष्णव परिवार

मेरा श्री वैष्णव परिवार,
हरी आजाओ एकबार,
मेरा छोटासा परिवार,
हरी आजाओ एकबार, हरी आजाओ (२) ।। टेर ।।
तुमसे बिछडे युग बीत गए,
मेरे मालीक मुझसे रूठ गंए,
मेरे प्राणों के आधार,
हरी आजाओ एकबार ।। १ ।।
तू मेरा है, मै तेरा हूँ,
मै तो जनम जनम से तेरा हूँ,
मुझे दर्शन दो साकार,
हरी आजाओ एकबार ।। २ ।।
जब गज ने तुम्हें पुकारा था,
तब तुमने दिया सहारा था,
मेरी नैय्या पडीरे मझधार,
हरी आजाओ एकबार ।। ३ ।।
जब याद तुम्हारी आती हैं,
हर वक्त मुझे तडपाती है,
मुझे भव से करदो पार,
हरी आजाओ एकबार ।। ४ ।।
मेरा श्री वैष्णव परिवार,
हरी आजाओ एकबार,
मेरा छोटा सा परीवार,
हरी आजाओ एकबार ।। ५ ।।

-अरविंद सोमाणी

अथ मंगला आरती

श्रियः कान्ताय देवाय कल्याणनिधयेऽर्थिनां ।
श्रीवैकुण्ठनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ।। १ ।।

लक्ष्मीसविभ्रमालोकसुभ्रूविभ्रमचक्षुषे ।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मंगलम् ।। २ ।।

श्री वैकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे ।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मंगलम् ।। ३ ।।

कमलाकुचकस्तूरीकर्दमांकितवक्षसे ।
यादवाद्रिनिवासाय संपत्पुत्राय मंगलम् ।। ४ ।।

सुस्मिताय सुनासाय सुदृशे सुंदरभ्रुवे ।
सुललाटकिरीटाय रंगराजाय मंगलम् ।। ५ ।।

मंगलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणाब्धये ।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मंगलम् ।। ६ ।।

श्रीमद्गोपालबालाय गोदाभीष्टप्रदायिने ।
श्रीसत्या सहितायास्तु कृष्णदेवाय मंगलम् ।। ७ ।।

नीलाचलनिवासाय नित्याय परमात्मने ।
सुभद्राप्राणनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ।। ८ ।।

आप्तकामाय पूर्णाय पुरुषोत्तमवासिने ।
परस्मैपुरुषायास्तु जगन्नाथाय मंगलम् ।। ९ ।।

सुभद्राप्राणानाथाय सुभद्राह्वानशालिने ।
बलभद्रसनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ।। १० ।।

आजन्मनः षोडशाब्दं स्तन्याद्यनभिलाषिणे ।
श्रीशानुभवपुष्टाय शठकोपाय मंगलम् ।। ११ ।।

कूरेश कुरुकानाथ दाशारथ्यादि देशिकाः ।
यच्छिष्या भाँति ते तस्मै यतिराजाय मंगलम् ।। १२ ।।

मंगलशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगलम् ।। १३ ।।

श्रीमते रम्यजामातृमुनीन्द्राय महात्माने ।
श्रीरंगवासिने भूयात् नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ।। १४ ।।

(इसके बाद श्रीविष्णुसहस्र नाम, गीता का पाठ करें,
रामायण, गीता व अन्य धार्मिक ग्रन्थों पर प्रवचन ।)

श्री सत्यनारायणजी की आरती

ॐ जयलक्ष्मीरमणा-प्रभु-जयलक्ष्मीरमणा,
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ।। टेर ।।
रतन जडित सिंहासन अद्भुत छविराजे ।
नारद करत निरञ्जन घंटा ध्वनि बाजै ।। १ ।।
प्रकट भयेकलि कारण द्विज को दर्श दियो ।
बूढो ब्राह्मण बनके कंचनमहल कियो ।। २ ।।

दुर्बल भील कठारो जिन पर कृपा करी ।
चन्द्र चूड एक राजा जिनकी विपति हरी ।। ३ ।।

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तजदीनी सोफल ।
भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीन्ही ।। ४ ।।

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो ।
श्रद्धा धारण कीन्ही जिनको काज सरयो ।। ५ ।।

ग्वालबाल संगराजा वनमें भक्ति करी ।
मन वांछित फलदीनो दीनदयालु हरी ।। ६ ।।

चढत प्रसाद सवायो कदली फलमेवा ।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा ।। ७ ।।
श्री सत्यनारायण की आरती जो कोई ।
नर गावे भणत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ।। ८ ।।

श्रीहनुमान् जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की ।। टेक ।।

जा के बल से गिरिवर काँपै ।
रोग दोष जा के निकट न झाँपै ।। १ ।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ।। २ ।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सीय सुधि लाये ।। ३ ।।

लंका सो कोट समुद्र-सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ।। ४ ।।

लंका जारि असुर संहारे ।
सियारामजी के काज सँवारे ।। ५ ।।

लक्ष्मण मूर्च्छित पडे सकारे ।
आनि संजीवन प्राण उबारे ।। ६ ।।

पैठि पताल तोरि जम-कारे ।
अहिरावन की भुजा उखारे ।। ७ ।।

बाँयें भुजा असुर दल मारे ।
दहिने भुजा संतजन तारे ।। ८ ।।

सुर नर मुनि आरती उतारे ।
जै जै जै हनुमान उचारे ।। ९ ।।

कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरति करत अंजना माई ।। १० ।।

जो हनुमान (जी) की आरति गावै ।
बसि वैकुंठ परमपद पावै ।। ११ ।।

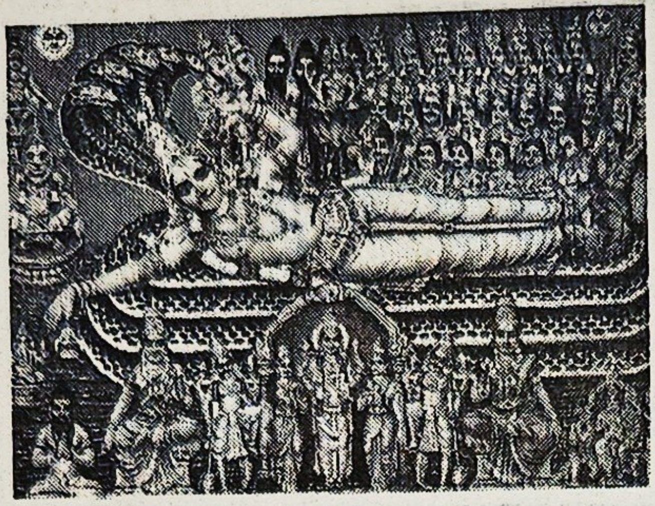

शयन आरती

करिये शयन श्रीभगवान्, करिये शयन श्रीभगवान् ।। टेर ।।
रैन आधी आ गई है, जगत है सुनसान ।
वीथि का नभ शीस आई, क्रौंच सर कुहकान ।। १ ।।

दिवस भर निज जन उवारे, श्रम भयो जु महान ।
श्रम निवारो सो महाप्रभु, भक्त वत्सलवान् ।। २ ।।

सुमन-शैय्या है संवारी, अति सुगन्धित वान ।
मधुर वीणा की झनक सुन, नयन है अलसान ।। ३ ।।

विनय सुन प्रभु शयन कीन्हे, कमल मुख मुसकान ।
करत व्यंजनसे पवन श्री, अतुल छवि प्रगटान ।। ४ ।।

श्रीसुदर्शन देत चौकी, और गण बलवान् ।
लक्ष्मण द्वारे पडो फिर, भोर को कर ध्यान ।। ५ ।।

—o—

इनके पुण्यस्मृतिमें

||मातृदेवो भव||

||पितृदेवो भव||

वै.वा.श्री. नारायणदासजी सोमाणी

वै.वा.श्री. रामनाथजी सोमाणी

वै.वा.श्रीमती कमलादेवी सोमाणी

स्व. सौ. स्वाती राठी, लातूर

(सुपुत्री कृष्णकुमार सोमाणी)

हमारे श्रद्धा स्थान

श्री. श्री. १००८, ज.गु. रा. चार्य
श्री वासुदेवाचार्यजी महाराज
" विद्याभास्कर "
कोसलेश सदन अयोध्या

भागवत भास्कर श्रद्धेय
पं. श्री. कृष्णचंद्रजी शास्त्री
(श्री ठाकुरजी)
श्री वृन्दावन धाम

पुस्तक प्राप्तिस्थान

कृष्णकुमार सोमाणी
१८ अ/२ मुंबई-पूना रोड, पूना ४११००३

मुकुन्ददास सोमाणी
६१०, रविवार पेठ, कापडगंज, पूना ४११००२.

अरविंद सोमाणी
सेवाकुंज, T. B. No.10,
प्रतापनगर, औरंगाबाद ४३१००५.

Padmalaya Printers. Ph. 221435